अल्पना

विजय कुमार सिंह

अल्पना

विजय कुमार सिंह
एम०ए० (हिन्दी), एल-एल०बी०
अमर निवास, पुलिस लाइन्स रोड
बुलन्दशहर - 203 001, उत्तर प्रदेश, भारत.
E-mail : vksingh52@hotmail.com

प्रथम संस्करण - 2014

मूल्य : 350/-

प्रकाशक एवं मुद्रक :
अखिल पब्लिशर्स एण्ड प्रिन्टर्स
11, प्रथम तल, जिला परिषद् मार्केट, कोर्ट रोड, काला आम,
बुलन्दशहर - 203 001, उत्तर प्रदेश, भारत.
मोबाइल : +91-9412744467.

लेखक द्वारा रचित अन्य पुस्तकें :
- ‘वल्लकी’ (श्रीमती कुसुम चौधरी के साथ), काव्य-संग्रह
- ‘स्पन्दन’, काव्य-संग्रह
- ‘स्तवन’, काव्य-संग्रह
- ‘संगिनी’, काव्य-संग्रह

स्वर्गीय माँ

श्रीमती प्रेमवती

(02.01.1931 – 26.03.2014)

को

समर्पित

अनुक्रमणिका

सुख मिले समृद्धि हो.....

सुख मिले समृद्धि हो,
पूरा शुभ जो लक्ष्य हो ।
कृपा रहे तेरी सदा,
हो सभी ही लभ्य हो ।

देवी हम शरण तेरी,
लक्ष्मी कृपा करो ।
लक्ष्मी कृपा करो,
देवी श्री कृपा करो ।

लक्ष्य मुख है चार हस्त,
दूर दृष्टि दृढ़ संकल्प ।
तीसरा व्यवस्था रूप,
चौथा तेरा श्रम सदृश्य ।

आदि श्री कृपा करो,
धान्य श्री कृपा करो ।
लक्ष्मी कृपा करो,
देवी श्री कृपा करो ।

हो निडर उलूक पर,
कला रूपी कमल पर ।
विष्णु संगिनी तुम्हीं,
काल शेषनाग पर ।

धैर्य श्री कृपा करो,
गज श्री कृपा करो ।
लक्ष्मी कृपा करो,
देवी श्री कृपा करो ।

मनोयोग श्रम के सार,
साथ दोनों गजराज ।
हो गणेश संग तुम,
है तुम्हीं से शुभ विचार ।

संतान श्री कृपा करो,
विजय श्री कृपा करो ।
लक्ष्मी कृपा करो,
देवी श्री कृपा करो ।

वत्सला स्वरूप धर,
कमल सजे दोनों कर ।
तीजा धन का दान दे,
चौथा हस्त वरद भर ।

विद्या श्री कृपा करो,
धन श्री कृपा करो ।
लक्ष्मी कृपा करो,
देवी श्री कृपा करो ।

(18.12.2013)
सिडनी

1. मुझे प्यार से देख लेते हो......

मुझे प्यार से देख लेते हो जब भी,
तो तन ले सजाता सुहानी थिरन ।
मन के बुझे दीप फिर जगमगाते,
लेकर उजाले की अनगिन किरण ।

चाहूँ कि बढ़कर मेरे पास आओ,
बाहों में अपनी मुझे तुम समाओ।
सिर को टिका लूँ मैं काँधे तुम्हारे,
कानों में मेरे ज़रा फुसफुसाओ ।

बजने दो सुर में कोई बाँसुरी फिर,
सजने दो फिर से कोई जलतरंग ।
मुझे प्यार से देख लेते हो जब भी,
तो तन ले सजाता सुहानी थिरन ।

चाहूँ कि मैं, मेरी जुल्फों से खेलो,
चेहरे को मेरे हथेली में ले लो।
झाँको हो अपलक मेरी आँख में तुम,
ओठों को मेरे ओठों पे ले लो ।

साँसों में भर लूँ मैं साँसें तुम्हारी,
ख़ुशबू से भर लूँ मैं अपना बदन ।
मुझे प्यार से देख लेते हो जब भी,
तो तन ले सजाता सुहानी थिरन ।

चाहूँ कि उड़ कर मेरे संग जाओ,
सितारों से आगे कहीं घर बसाओ ।
हों सारी ख़ुशियाँ न ग़म हो कोई भी,
हँसते हुए सारा जीवन बिताओ ।

पलकों पे तेरे ही सपने सजे हों,
सपनों में सजते सभी सात रंग ।
मुझे प्यार से देख लेते हो जब भी,
तो तन ले सजाता सुहानी थिरन ।

(08.03.2013)
सिडनी

2. आओ मिल जाएँ हम ऐसे जैसे.....

आओ मिल जाएँ हम ऐसे जैसे मिल जाता जल में जल,
है फूल बसी जैसे ख़ुशबू चंदन में बसता गुण शीतल ।

मेरा सुख हो अब तेरा सुख,
तेरे दु:ख सारे मेरे हों ।
जब तक यह जीवन साथ रहें,
महके सब शाम सबेरे हों ।
सुरसरि जैसी जीवन धारा बहती जाए सुर में कल कल,
आओ मिल जाएँ हम ऐसे जैसे मिल जाता जल में जल ।

हों ख़ुश दोनों के मात पिता,
अनुकूल हों सब रिश्ते नाते ।
हों ख़ुश सब अपने भाई बहिन,
सब ख़ुश जो अपने कहलाते ।
धन धान्य भरे धरती माता, सिर सदा रहे उसका आँचल,
आओ मिल जाएँ हम ऐसे जैसे मिल जाता जल में जल ।

हे ईश्वर दो वरदान हमें,
जीवन पथ पर बढ़ते जाएँ ।
अपने-अपने कर्त्तव्यों को,
हम हँसते-हँसते कर पाएँ ।
हो कृपा हमें सब देवों की, हो पितरों का हमको संबल,
आओ मिल जाएँ हम ऐसे जैसे मिल जाता जल में जल ।

(13.03.2013)
सिडनी

3. देखिए कितना हसीं मौसम.....

देखिए कितना हसीं मौसम है,
देखिए कितना हसीं आलम है ।
छाईं हैं नम्र सुनहरी किरणें,
आज तो अपनी ज़मीं जन्नत है ।

आइए लुत्फ़ उठा लें हम भी,
आइए ख़्वाब सजा लें हम भी ।

देखिए फूल सभी महके हैं,
देखिए बोल सभी चहके हैं ।
दूर तक देख लो जिधर चाहो,
आज सारे ही देखो बहके हैं ।

आइए जश्न मना लें हम भी,
आइए ख़्वाब सजा लें हम भी ।

कैसे ये साँस तेज चलती है,
कैसे ये आँख देख झुकती है ।
दिल धड़कता है देख क्यों ऐसे,
कैसे ये बात लब पे रुकती है ।

आइए राज़ जता लें हम भी,
आइए ख़्वाब सजा लें हम भी ।

जैसे ये दिन–ओ–रात मिलते हैं,
जैसे ये सुबह–ओ शाम खिलते है ।
एक थक जाता दूसरा जागे,
पर सदा साथ साथ चलते हैं ।

आइए साथ निभा लें हम भी,
आइए ख़्वाब सजा लें हम भी ।

(15.03.2013)

सिडनी

4. हम भी तुम्हारे इतना तो.....

हम भी तुम्हारे इतना तो जानो,
न आँसू बहाओ मेरी बात मानो ।

जो ग़म तुम्हारा वही तो हमारा,
आओ बना लो हमें तुम सहारा,
न सिर यूँ झुकाओ मेरी बात मानो,
न आँसू बहाओ मेरी बात मानो ।

सिहरे न बैठो कहीं घूम आएँ,
कैसा समां है चलो देख आएँ,
ज़रा मुस्कराओ मेरी बात मानो,
न आँसू बहाओ मेरी बात मानो ।

यदि यूँ ही रोओगे रो देंगे हम भी,
यदि तुम हँसोगे हँस देंगे हम भी,
हँसो और हँसाओ मेरी बात मानो,
न आँसू बहाओ मेरी बात मानो ।

(18.03.2013)
सिडनी

5. अपने काँधे मेरा सिर ले.....

अपने काँधे मेरा सिर ले, थोड़ा मुझको रो लेने दो,
कब से जागे मेरे नयना, थोड़ा मुझको सो लेने दो ।

मैं देख रही इस आशा से, तुम अपनी बाहें फैला दो,
मेरे चेहरे का चुम्बन लो, बिखरे बालों को सहला दो,
अपनी बाहों के झूले में, थोड़ा मुझको खो लेने दो,
कब से जागे मेरे नयना, थोड़ा मुझको सो लेने दो ।

मैं झाँकू तेरे नयनो में, मन में भर लूँ फिर तुमको मैं,
अंग से अंग लगा लूँ मैं, चिपका लूँ तुमको कस के मैं,
जो मिलता है वो मिल जाए, जो खोता है खो लेने दो,
कब से जागे मेरे नयना, थोड़ा मुझको सो लेने दो ।

मैं जानूँ अपनी किस्मत को, जिसमें आया केवल रोना,
मैं पा लूँ तुमको पल भर ही, फिर जो भी है पाना खोना,
मैं कुछ पल तो अपने कह लूँ, जो होता है हो लेने दो,
कब से जागे मेरे नयना, थोड़ा मुझको सो लेने दो ।

(21.03.2013)
सिडनी

6. उगो कि जैसे सूर्य हो.....

उगो कि जैसे सूर्य हो लगे कोई नया विहान,
जगमगा दो द्वार द्वार यह ज़मीन आसमान ।

उगो कि गुनगुना उठें बाग़ के भ्रमर सभी,
उगो कि चहचहा उठें वृक्ष के विहग सभी,
फडफड़ा के उड़ पड़ें फिर विहग नई उड़ान,
जगमगा दो द्वार द्वार यह ज़मीन आसमान ।

उगो कि मुस्करा उठें पात फूल और कली,
उगो कि खिलखिला उठें गाँव घाट घर गली,
आस से सजे हों उर कंठ स्वर में स्वस्ति गान,
जगमगा दो द्वार द्वार यह ज़मीन आसमान ।

उगो कि झिलमिला उठें वापि सिंधु निर्झरी,
उगो कि लहलहा उठें हर तरफ फसल उगी,
स्फूर्ति से भरें हो तन न शेष हो कोई थकान,
जगमगा दो द्वार द्वार यह ज़मीन आसमान ।

(24.03.2013)
सिडनी

7. चुपके-चुपके वह आएगा.....

चुपके-चुपके वह आएगा, होले-होले मुस्काएगा,
कुछ कह देगा कान में अपने, दीखेंगे फिर मीठे सपने ।

ॠतु लेगी फिर से अँगड़ाई,
चल देगी फिर से पुरवाई ।
फिर कोई बंसी बज लेगी,
बज देगी फिर से शहनाई ।
फिर से लगेगी पायल बजने, दीखेंगे फिर मीठे सपने,
कुछ कह देगा कान में अपने, दीखेंगे फिर मीठे सपने ।

पंछी सुर में फिर गाएँगे,
फूल सभी फिर खिल जाएँगे ।
बागों में फिर से आ भँवरे,
गुनगुन करते मंडराएंगे ।
फिर से लगेंगी कलियाँ हँसने, दीखेंगे फिर मीठे सपने,
कुछ कह देगा कान में अपने, दीखेंगे फिर मीठे सपने ।

खूब सजेगी कोई गुजरिया,
भर लेगी फिर रीती गगरिया ।
दूर गगन में मेघ दिखेंगे,
धरती लेगी धानी चुनरिया ।
फिर से लगेंगी बूँदें गिरने, दीखेंगे फिर मीठे सपने,
कुछ कह देगा कान में अपने, दीखेंगे फिर मीठे सपने ।

(25.03.2013
सिडनी

8. जब से तूने कहा है.....

जब से तूने कहा है बड़े प्यार से,
लो सदा के लिए हम तुम्हारे हुए ।
ये ज़मीं जैसे देखो कि ज़न्नत हुई,
अब तो सारे हंसीं ये नज़ारे हुए ।

तेरे ओठों पे खिलते गुलाबी कमल,
तू लगे जैसे मुझको रुहानी गज़ल ।
तेरा चेहरा मुझे चाँद जैसा लगे,
तू चले जैसे चलती है हिरनी चपल ।

तेरे मद से भरे झील जैसे नयन,
देख इनको ही कितने बेचारे हुए ।
ये ज़मीं जैसे देखो कि ज़न्नत हुई,
अब तो सारे हंसीं ये नज़ारे हुए ।

मुझे तू ही लगे जैसे खिलता सुमन,
मुझे तू ही लगे खुशबुओं का चमन ।
मुझे तू इक सुहानी सुबह सी लगे,
तेरा तन यूँ लगे जैसे संदल बदन ।

जब से मुझको तुम्हारा सहारा मिला,
तब से सारे ही अपने सहारे हुए ।
ये ज़मीं जैसे देखो कि ज़न्नत हुई,
अब तो सारे हंसीं ये नज़ारे हुए ।

मखमली सी लगे अब मुझे चाँदनी,
रेशमी सी लगे अब मुझे रोशनी ।
मुझको मीठी लगे जो सुनूँ में सदा,
मेरे लब पे सजे अब सदा रागिनी ।

मेरे दामन में खुशियाँ ही बाकी रहीं,
ग़म थे जितने भी सारे किनारे हुए ।
ये ज़मीं जैसे देखो कि ज़न्नत हुई,
अब तो सारे हंसीं ये नज़ारे हुए ।

मैं भी बन के घटा सा जरा घूम लूँ,
मैं भी बन के पवन सा ज़रा झूम लूँ ।
पंख में भी सजा पंछियों की तरह,
मैं भी चाहूँ कि उड़ के गगन चूम लूँ ।

अब तो सूरज भी देखे मुझे प्यार से,
अब तो अपने सभी चाँद तारे हुए ।
ये ज़मीं जैसे देखो कि ज़न्नत हुई,
अब तो सारे हंसीं ये नज़ारे हुए ।

(28.03.2013)
सिडनी

9. है अज़ीब हाल रे जिंदगी.....

है अज़ीब हाल रे जिंदगी, तेरा कौन सा यह तौर है,
तू सोचता किसी और को, तुझे सोचता काई और है।

तू किसी के रंग में आए है, कोई तेरे रंग में आ रहा,
तू किसी के सपने सजाए है, कोई तेरे सपने सजा रहा,
तू चाहता किसी और को, तुझे चाहता कोई और है,
तू सोचता किसी और को, तुझे सोचता काई और है।

तू किसी को दीप जलाए है, कोई तेरे दीप जला रहा,
तू किसी को पास बुलाए है, कोई तुझको पास बुला रहा,
तू माँगता किसी और को, तुझे माँगता कोई और है,
तू सोचता किसी और को, तुझे सोचता काई और है।

तू किसी को सज़दे में लाए है, कोई तुझको सज़दे में ला रहा,
तू किसी को नगमों में गाए है, कोई तुझको नगमों में गा रहा,
तू पूजता किसी और को, तुझे पूजता कोई और है,
तू सोचता किसी और को, तुझे सोचता काई और है।

(29.03.2013)
सिडनी

10. ये बुझा हुआ सा दिन.....

ये बुझा हुआ सा दिन गया, ये थकी हुई सी रात है,
है हर कोई चुपचाप सा, ऐसा कि जैसे उदास है ।

न ही फूल खिलते उस तरह न ही गूँजते वैसे भ्रमर,
न ही ख़ुशबू लेकर यह पवन न ही झूमते वैसे शज़र,
अब नभ में फीकी सी सजे, तारों भरी बारात है,
है हर कोई चुपचाप सा, ऐसा कि जैसे उदास है ।

गुज़रा था एक तूफ़ान सा, ऊँची उठी थी एक लहर,
उजड़ा कहीं कोई आशियाँ टूटा कहीं सपनों का घर,
स्मृति में जैसे यूँ बसे, जैसे आज की बात है,
है हर कोई चुपचाप सा ऐसा कि जैसे उदास है ।

जाने न अब कब आएगी, किस ओर से अपनी सहर,
हम फिर से कब खिल जाएँगे, मुस्काएँगे फिर ये अधर,
पर जान ले जैसा भी है, कोई जो हरपल साथ है,
है हर कोई चुपचाप सा, ऐसा कि जैसे उदास है ।

(31.03.2013)
सिडनी

11. आए तुम आए तुम.....

आए तुम आए तुम,
आए तुम आए तुम ।

मन का दीप जल गया, तारे जगमगा उठे,
रोम-रोम खिल गया, ओठ मुस्करा उठे,
आए तुम आए तुम,
आए तुम आए तुम ।

फूल जैसे तन हुआ, नेत्र द्वार सज गए,
रंग छा बरस नई, अल्पना सी रच गए,
आए तुम आए तुम,
आए तुम आए तुम ।

शब्द लय से सज गए, भौरे गुनगुना उठे,
फैली एक सुरभि नई, पंछी चहचहा उठे,
आए तुम आए तुम,
आए तुम आए तुम ।

एक नदी सी बह चली, ताल में उठीं तरंग,
धानी सी हुई धरा, मन में आ बसा बसंत,
आए तुम आए तुम,
आए तुम आए तुम ।

(03.04.2013)
सिडनी

12. मन रे धीर तुम धरो.....

मन रे धीर तुम धरो,
नैन नीर मत झरो ।

मेरी बात मान लो,
सारी बात जान लो ।
कोई आएगा नहीं,
चाहे जो भी ठान लो ।

रे गुमान मत करो,
मन रे धीर तुम धरो ।

कौन जो सुने तेरी,
किसको है पड़ी तेरी ।
कौन है जो पूछता,
कौन है तू किस गली ।

ना रे रंज मत करो,
मन रे धीर तुम धरो ।

काले मेघ आ गए,
तम के साए छा गए ।
क्या हुआ जो आ यूँ हीं,
थोड़ा सो डरा गए ।

ना रे ना रे मत डरो,
मन रे धीर तुम धरो ।

(05.04.2013)
सिडनी

13. एक तुम ही तो सिर्फ.....

एक तुम ही तो सिर्फ मेरे हो,
और जो भी है वो बेगाना है ।
पर न कहना कभी ये गैरों से,
वे तो समझेंगे कि दीवाना है ।

ये सदा जुल्फें तेरी छाँव मेरी,
ये तेरे काँधे सहारे की तरह ।
हैं तेरी झील सी गहरी आँखें,
ये मेरे सपने उजाले की तरह ।

ये तेरा दिल ही मेरा मंदिर है,
है मेरा दर यही ठिकाना है ।
पर न कहना कभी ये गैरों से,
वे तो समझेंगे कि दीवाना है ।

ये सदा रस से भरे ओठ तेरे,
ये तेरे गाल गुलाबी से कमल ।
ये तेरी गर्म महकती साँसें,
तू जो बोले तो बने कोई ग़ज़ल ।

एक तेरी बातें सदा सच जानूँ,
बाकी सब झूँट है फसाना है ।
पर न कहना कभी ये गैरों से,
वे तो समझेंगे कि दीवाना है ।

ये सदा साथ देते हाथ तेरे,
ये तेरा रंगों में सजता आँचल ।
मैं जहाँ धर दूँ वहाँ पग तेरे,
ये सदा धुन को सजाती पायल ।

हैं तेरी हर हँसी में गीत मेरे,
ये मेरा सुर मेरा तराना है ।
पर न कहना कभी ये गैरों से,
वे तो समझेंगे कि दीवाना है ।

(08.04.2013)
सिडनी

14. एक तुम ही को देख.....

एक तुम ही को देख हर्षाते,
वरना यूँ ही उदास रहते हैं ।
एक तुम ही कोदेख मुस्काते,
वरना यूँ ही उदास रहते हैं ।

एक तुम ही से फूल खिलते से,
एक तुम ही से पर्ण हिलते से ।
जैसे हो कोई भटकती नौका,
एक तुम ही से कूल मिलते से ।

एक तुम ही को देख शर्माते,
वरना यूँ ही उदास रहते हैं ।
एक तुम ही को देख मुस्काते,
वरना यूँ ही उदास रहते हैं ।

एक तुम ही से बात करते से,
एक तुम ही से साथ चलते से ।
जैसे हो कोई अँधेरा गहरा,
एक तुम ही से दीप जलतेसे ।

एक तुम ही को देख इतराते,
वरना यूँ ही उदास रहते हैं ।
एक तुम ही को देख मुस्काते,
वरना यूँ ही उदास रहते हैं ।

एक तुम ही से स्वप्न सजते से,
एक तुम ही से जख्म भरते से ।
जैसे हो कोई घनी नीरवता,
एक तुम ही से साज बजते से ।

एक तुम ही को देख इठलाते,
वरना यूँ ही उदास रहते हैं ।
एक तुम ही को देखमुस्काते,
वरना यूँ ही उदास रहते हैं ।

(09.04.2013)
सिडनी

15. गुज़रा था एक तूफान.....

गुज़रा था एक तूफान सा,
ऊँची सी उठती एक लहर।
उजड़ा कोई एक आशियाँ,
टूटा कहीं सपनों का घर।

स्मृति में वैसे ही बसा,
जैसे कि गुज़रा आज है।
ये आज की सी बाते है,
ये आज की सी बात है।

थे साथ में अपने सभी,
करता भी कोई क्या मगर।
सबको थी अपनी पड़ी,
थी सबको ही अपनी फ़िकर।

सब ओर बिखरा सा पड़ा,
छूटा हर एक का साथ है।
ये आज की सी बात है,
ये आज की सी बात है।

न ही फूल खलते उस तरह,
न ही गुनगुनाते हैं भ्रमर।
न ही खुशबू लेकर ये पवन,
न ही झूमते है ये शज़र।

अब चुप लगें सारे विहग,
ऐसा लगे कुछ ख़ास है।
ये आज की सी बात है,
ये आज की सी बात है।

लगता है सब वीरान सा,
देखें जिधर भी उस तरफ ।
ये मन बिलखता है सदा,
ये नयन झरते अश्रु भर ।

हर ओर एक मायूसी सी,
अब हर तरफ चुपचाप है ।
ये आज की सी बात है,
ये आज की सी बात है ।

(11.04.2013)
सिडनी

16. कैसे दिलकश लगे है.....

कैसे दिलकश लगे है जो मौसम,
साथ तुम जो रहो तो लगे भी ।
कैसे कह दें हसीं है ये आलम,
साथ तुम हो रहो तो लगे भी ।

प्रात सूरज की किरणें सुनहरी,
आज हर ओर छाई हुई हैं ।
आज धरती ने देखो ये शबनम,
सारे तन पर सजाई हुई है ।

मोतियों सी सजी ये जो शबनम,
साथ तुम जो रहो तो लगे भी ।
कैसे कह दें हसीं है ये आलम,
साथ तुम हो रहो तो लगे भी ।

देखो पेड़ों पे सजती हैं कलियाँ,
फूल खिलते हुए मुस्कराते ।
बाग में उड़ रहे आ के भँवरे,
झूमकर फूलों को चूम जाते ।

ये जो मीठी सी भौरों की गुंजन,
साथ तुम जो रहो तो लगे भी ।
कैसे कह दें हसीं है ये आलम,
साथ तुम हो रहो तो लगे भी ।

बह रही है ये शीतल हवा फिर,
गंध फूलों की अपने में भरके ।
गा के कहती है कोई कोयलिया,
संग तू भी किसी को तो ले ले ।

ये जो कोयल सजाती है सरगम,
साथ तुम जो रहो तो लगे भी ।
कैसे कह दें हसीं है ये आलम,
साथ तुम हो रहो तो लगे भी ।

(12.04.2013)
सिडनी

17. कभी राम बन के आए....

कभी राम बन के आए,
कभी श्याम बन के आए ।
आए हो जब भी धरती,
अभिराम बन के आए ।

तुम ही बने हो नानक,
तुम ही बने हो मूसा ।
तुम ही बने मौहम्मद,
तुम ही बने हो ईसा ।

तुम भक्तों के दुखों का,
परित्राण बन के आए ।
आए हो जब भी धरती,
अभिराम बन के आए ।

तुम ही बने हो जिन भी,
तुम ही बने हो गौतम ।
तुम ही बने असीसी,
तुम ही बने हो मरियम ।

तुम दर्द में सभी के,
आराम बन के आए ।
आए हो जब भी धरती,
अभिराम बन के आए ।

तुम ही बने हो औलिया,
तुम ही बने हो साईं ।
तुम ही बने हो चिश्ती,
तुम ही बने बहाई ।

तुम भक्तों की जिह्वा पर,
गुणगान बन के आए ।
आए हो जब भी धरती,
अभिराम बन के आए ।

(13.04.2013)
सिडनी

18. यूँ तो चलने को चलते.....

यूँ तो चलने को चलते अकेले ही हम,
चलते जाना कठिन है तुम्हारे बिना ।
यूँ तो कहने को कहते कि हँसते हैं हम,
मुस्कराना कठिन है तुम्हारे बिना ।

हम भी सहते हैं सारे ज़ुल्म–ओ–सितम,
हम भी सहते हैं सारे रंज और गम ।
खुद ही हमने सजाए थे मन में कभी,
हम भी सहते हैं सारे वे टूटे भरम ।

यूँ तो सहने को सहते हैं उसका करम,
सहते जाना कठिन है तुम्हारे बिना ।
यूँ तो कहने को कहते कि हँसते हैं हम,
मुस्कराना कठिन है तुम्हारे बिना ।

क्या सुना हमने ऐसा कि हम हँस गए,
क्या सुना हमने ऐसा कि हम रो गए ।
भूलकर खुद ही अपने ज़मीं आसमां,
क्या सुना हमने ऐसा कि हम खो गए ।

यूँ तो बहने को बहते हैं गीतों में हम,
बहते जाना कठिन है तुम्हारे बिना ।
यूँ तो कहने को कहते कि हँसते हैं हम,
मुस्कराना कठिन है तुम्हारे बिना ।

सब समझते हैं रहते हैं हम आन से,
सब समझते हैं रहते हैं हम शान से ।
दु:ख हमें भी कोई है अजूबा ही है,
सब समझते हैं रहते हैं आराम से ।

यूँ तो रहने को रहते हैं दुनियाँ में हम,
रहते जाना कठिन है तुम्हारे बिना ।
यूँ तो कहने को कहते कि हँसते हैं हम,
मुस्कराना कठिन है तुम्हारे बिना ।

(14.04.2013)
सिडनी

19. उर बसे शब्दों को कैसे.....

उर बसे शब्दों को कैसे,
लय में मैं दोहरा सकूँगा ।
तुम बताओ किस तरह मैं,
गीत फिर से गा सकूँगा ।

मन में मेरे ज्वार उठते,
अश्रु झरते ये नयन अब ।
है मेरी हालत अज़ब सी,
मैं कहीं हूँ मन कहीं अब ।
कैसे जाने किस तरह से,
मन को अब बहला सकूँगा ।
तुम बताओ किस तरह मैं,
गीत फिर से गा सकूँगा ।

क्यों हुआ यह साथ मेरे,
यह तो जाने ही विधाता ।
हमसे रूठा है सदा को,
जिससे था बरसों का नाता ।
जो हुआ है क्या उसे मैं,
यूँ ही अब बिसरा सकूँगा ।
तुम बताओ किस तरह मैं,
गीत फिर से गा सकूँगा ।

जिस तरफ मैं देखता हूँ,
दिख रहा मुझको अँधेरा ।
छिप गया जाने कहाँ पर,
मेरे मन का शुभ सवेरा ।

जानकर इस सत्य को मैं,
किस तरह झुठला सकूँगा ।
तुम बताओ किस तरह मैं,
गीत फिर से गा सकूँगा ।

(15.04.2013)
सिडनी

20. तुमसे हसीं या जिंदगी.....

तुमसे हसीं ये जिंदगी, तुमसे हसीं संसार है,
तुमको मैंने दिल दिया तुमसे ही मुझको प्यार है ।

जब भी तुमको सोच लूँ रौशनी सी तुम लगो,
पूर्णिमा की चाँद सी चाँदनी सी तुम लगो,

एक तुम ही हो मेरी, तुमसे ही मुझको करार है,
तुमको मैंने दिल दिया तुमसे ही मुझको प्यार है ।

जब भी तेरा स्वर सुनूँ एक सरगम बज़ उठे,
आ अधर मेरे कोई गीत कविता सज उठे,

तुम जो आओ तो लगे, कि आई जैसे बहार है,
तुमको मैंने दिल दिया तुमसे ही मुझको प्यार है ।

जब भी तुमको देख लूँ खिल रहूँ जैसे कमल,
मन तरंगित हो रहे नयन मेरे हों सजल,

तुम मुझे वर से लगो, कभी देव का उपहार है,
तुमको मैंने दिल दिया तुमसे ही मुझको प्यार है ।

(17.04.2013)
सिडनी

21. हम भी हँसे तब तभी.....

हम भी हँसे तब, तभी खिलखिलाए,
जो तुम मुस्कराए, जो तुम मुस्कराए ।

आँखों से जब भी तेरी ज़ाम छलका,
हमको भी आया सुरूर हल्का हल्का,
होकर नशे में तभी लड़खड़ाए,
जो तुम मुस्कराए, जो तुम मुस्कराए ।

लहराया तूने जो सतरंगी आँचल,
रह–रह के होती सुहानी सी हलचल,
हम भी विहग से, तभी चहचाहए,
जो तुम मुस्कराए, जो तुम मुस्कराए ।

अधरों के पीछे से द्विज तेरे झाँके,
मेरे मन में छाया अँधेरा सा भागे,
किरणों के जैसे, तभी जगमगाए,
जो तुम मुस्कराए, जो तुम मुस्कराए ।

(18.04.2013)
सिडनी

22. आ जा रे आजा आजा रे मिल.....

आ जा रे आजा, आजा रे मिल,
तेरे संग रहना है कहता है दिल ।

न फूलों की खुशबू न पेड़ों की छाँव,
कभी चलते चलते थके जाते पाँव,
तेरे संग सहना है कहता है दिल,
तेरे संग रहना है कहता है दिल ।

खुशियाँ ही खुशियाँ न कोई हो गम,
जीवन की नदिया बहे जाएँ हम,
तेरे संग बहना है कहता है दिल,
तेरे संग रहना है कहता है दिल ।

ओ दुनियाँ के मालिक सुनो रे दुआ,
मिल के कभी भी न हम हों जुदा,
तेरे संग कहना है कहता है दिल,
तेरे संग रहना है कहता है दिल ।

(19.04.2013)
सिडनी

23. तेरी शान में कह रहूँ क्या.....

तेरी शान में कह रहूँ क्या न जाने,
ज़ेहन में हजारों लफज़ घूमते हैं ।
कह तो रहूँ पर ये मुश्किल मेरी है,
तुझे देखकर बेअसर घूमते हैं ।

तेरे चेहरे से चाँद रोशन हुआ है,
तेरी आँखों से है सुबह हर उज़ाली ।
तेरे दाँतों से दामिनी में चमक है,
तेरी जुल्फों से हुई रात काली ।

तुझे सोच शायर गज़ल लिख रहें हैं,
दीवाने गुलों को भी झुक चूमते हैं ।
तेरी शान में कह रहूँ क्या न जाने,
ज़ेहन में हजारों लफज़ घूमते हैं ।

तेरे स्वर ने ही सारी सरगम सजाई,
तेरे ओठों से सारा रस ये सजा है ।
तेरे गालों से सीखा फूलों ने खिलना,
तेरी भोंहों ने कामना को गढ़ा है ।

तेरे अक्स से बन रही सारी मदिरा,
इसे रिंद पीकर अलस झूमते हैं ।
तेरी शान में कह रहूँ क्या न जाने,
ज़ेहन में हजारों लफज़ घूमते हैं ।

तेरी बाँहों से ही है विस्तार नभ का,
तेरे नेह ने ही ये अमृत बनाया ।
तेरे ही तो आँचल से सजतीं हैं वादी,
तेरी ही हँसी से जहाँ मुस्कराया ।

तेरे प्यार से कहकशाँ है ये रोशन,
ज़मीं चाँद तारे विहँस घूमते हैं ।
तेरी शान में कह रहूँ क्या न जाने,
ज़ेहन में हजारों लफज़ घूमते हैं ।

(20.04.2013)
सिडनी

24. कुछ बात कर मेरे साथिया.....

कुछ बात कर मेरे साथिया,
मेरी शाम फिर से उदास है ।

कोई आईना सा बिखर गया,
कोई हादसा सा गुज़र गया ।
फिर छोड़ मुझको ही राह में,
मेरा कारवाँ सा किधर गया ।

जो मैं चाहता था न मिल सका,
अभी है अधूरी सी प्यास है ।

कोई झूँठे ख़्वाब दिखा गया,
कोई आ के यूँ ही रुला गया ।
मुझे जाना तो कहीं और था,
मुझे राह कोई बता गया ।

है लगे कि जैसे मैं थक गया,
अब है न कोई भी आस है ।

कोई राग मुझको जँचा नहीं,
कोई काम मुझको रुचा नहीं ।
मैं भी देखता हँसता जहाँ,
पर मन में मेरे बसा नहीं ।

है यही सुकून मुझे बहुत,
कि तू आज भी मेरे साथ है ।

(21.04.2013)
सिडनी

25. गा रहो कुछ इस तरह से.....

गा रहो कुछ इस तरह से यह तुम्हें लगने लगे,
कि तुम हो जिंदा और तुम्हारी ये जवानी शेष है ।
लिख गई जैसी अभी तक लिख गई सो लिख गई,
शेष लिखनी जो तुम्हें वह तो कहानी शेष है ।

मन में नव विस्तार भर लो कह रहा नीला गगन,
ले सुरभि फिर चल पड़ो तुम कह रहा बहता पवन ।
तुम अटल से हो रहो योगी सा पर्वत कह रहा,
खिल रहो मेरी तरह फिर कह रहा खिलता सुमन ।

सामर्थ्य लो मेरी तरह से बहती नदिया कह रही,
देख लो उच्छल तरंगें ये रवानी शेष है ।
लिख गई जैसी अभी तक लिख गई सो लिख गई,
शेष लिखनी जो तुम्हें वह तो कहानी शेष है ।

सूर्य किरणों से सजो तुम भर रहो हर रोशनी,
चंद्र किरणों को बसा कर बन रहो अब चाँदनी ।
झिलमिलाते तुम सजो हो झील के पानी सृद्श,
कोई सरगम तुम सजा लो हो रहो एक रागिनी ।

कह रही तुमसे मनुजता उर बसा कर गा रहो,
दूसरों का दर्द दिल में दृग में पानी शेष है ।
लिख गई जैसी अभी तक लिख गई सो लिख गई,
शेष लिखनी जो तुम्हें वह तो कहानी शेष है ।

भर रहो तुम धैर्य मेरा कह रही पल पल धरा,
गहराई आ भर लो मेरी सागर हिलोरें ले रहा ।
तृप्त कर दो सबके मन को गाएँ आ बूँदें बरस,
आस का संचार कर लो प्रात हँस कर कह रहा ।

कह रहा हर धूल का कण मत समझ छोटा कभी,
मुझसे ही ब्रह्मांड रचता यह बतानी शेष है ।
लिख गई जैसी अभी तक लिख गई सो लिख गई,
शेष लिखनी जो तुम्हें वह तो कहानी शेष है ।

(22.04.2013)
सिडनी

26. थक गया हूँ आज इतना.....

थक गया हूँ आज इतना जान लो,
आओ आकर बाहुओं में बाँध लो ।

है जहाँ पर धड़कनों की धुन सजी,
अनवरत ही श्वास का संगीत है ।
ले रहा खुशबू जहाँ से आ पवन,
और महकती मेरे प्रति भी प्रीत है ।
उर उसी पर मेरे सर को थाम लो,
आओ आकर बाहुओं में बाँध लो ।

वह जहाँ पर स्वप्न मेरे ही सजे,
मिल रहा उनको जहाँ पर रूप है ।
नर्म आँचल बादलों की ओट सा,
है जहाँ पर शांति सुख की धूप है ।
आओ आकर आ के वह स्थान दो,
आओ आकर बाहुओं में बाँध लो ।

भूल जाऊँ कौन सा आघात है,
कैसा आगत कौन सा इतिहास है ।
बच रहे इतना ही स्मृति में मेरे,
कि तू ही केवल तू ही मेरे पास है ।
आओ आकर अंक में विश्राम दो,
आओ आकर बाहुओं में बाँध लो ।

(23.04.2013)
सिडनी

27. किस को याद कर रहे.....

किसी को याद कर रहे और गुनगुनाए दिल,
उसी के पास फिर चलो बार–बार गाए दिल ।

मेरे दिल से बार–बार ये सदा ही आ रही,
बार–बार ही मुझे उसी की याद आ रही,
तुम जरूर जाओगे मुझे कहे सुनाए दिल,
उसी के पास फिर चलो बार–बार गाए दिल ।

कह रहा है बार–बार कहीं पे इंतज़ार है,
कहीं कोई तेरे लिए कब से बेक़रार है,
चले चलो उसी जगह मुझे कहे बताए दिल,
उसी के पास फिर चलो बार–बार गाए दिल ।

है बहुत हसीन सी भोली सी भी है अदा,
कोई नहीं ज़हान में उसके जैसा दूसरा,
एक वही तो है तेरा खुद ही यूँ जताए दिल,
उसी के पास फिर चलो बार–बार गाए दिल ।

(24.04.2013)
सिडनी)

28. जब कोई गहरी चोट लगी.....

जब कोई गहरी चोट लगी और पीड़ा से चिल्लाया माँ,
मैंने तुमको ही याद किया और तुमको ही दोहराया माँ ।

तुम पर ऐसी कैसे गुज़री,
कोई क्यों कहता मुझसे आकर ।
जब बहते थे मेरे नयना,
कोई क्यों रोता कुछ समझाकर ।
तुम ही तो स्मृति में आयीं और तुमने ही दुलराया माँ,
मैंने तुमको ही याद किया और तुमको ही दोहराया माँ ।

मुझको फिर वे दिन याद आते,
जब गोद में सोता सर धरकर ।
चिल्ला चिल्ला कर मैं रोता,
झूँठे मूँठे ही कुछ चिढ़कर ।
तुमने मुझको तब मुस्काते कैसे कैसे बहलाया माँ,
मैंने तुमको ही याद किया और तुमको ही दोहराया माँ ।

अपना बेटा सबसे सुन्दर,
वह राज करेगा दुनियाँ पर ।
उसका एक राजमहल होगा,
खुशियाँ भी होंगीं जी भरकर ।
मैं फिर से रोता हँस जाता तुमने कैसे बहकाया माँ,
मैंने तुमको ही याद किया और तुमको ही दोहराया माँ ।

(24.04.2013)
सिडनी

29. तेरी भी रात ढ़ल रहेगी.....

तेरी भी रात ढ़ल रहेगी और भोर आएगी,
तेरे मन की भी कली खिल के मुस्कराएगी ।

न यूँ उदास हो न दिल को बेकरार कर,
ज़रा सा सब्र तू ज़रा सा इंतज़ार कर ।

आ के चहचहाएँगी चिड़ियाँ तेरे पास में,
आ के गुनगुनाएँगे भँवरे तेरे साथ में ।
खुशबू भर के मंद सी फिर बहेगी ये हवा,
आ के लाली छाएगी काले आसमान में ।

सुन मेरी तू सिर्फ मुझपे ऐतबार कर,
ज़रा सा सब्र तू ज़रा सा इंतज़ार कर ।

कोई होगा ऐसा खुद ही पास तेरे आएगा,
कोई होगा ऐसा तेरे साथ खिलखिलाएगा ।
चल पड़ेगा साथ में तू चले भी जिस तरफ,
कोई होगा ऐसा तेरा साथ जो निभाएगा ।

कोई ऐसा हो चले तो जाँ निसार कर,
ज़रा सा सब्र तू ज़रा सा इंतज़ार कर ।

देख लेना फिर तेरे ख़्वाब जाग जाएँगे,
देख लेना फिर तेरे नैन जगमगाएँगे ।
मन करेगा उड़ रहूँ मैं भी पंछी की तरह,
देख लेना फिर तेरे ओठ गीत गाएँगे ।

ज़िंदगी सदा हसीं तू इससे प्यार कर,
ज़रा सा सब्र तू ज़रा सा इंतज़ार कर ।

(25.04.2013)

सिडनी

30. कोई भूले से प्यार का बैठा.....

कोई भूले से प्यार कर बैठा,
जान अपनी निसार कर बैठा ।

उसने जाना कि मेरी मंजिल है,
उसने सोचा कि मेरा साहिल है ।
एक वह ही सदा निगाहों में,
उसको पाने में कैसी मुश्किल है ।

यूँ ही वह ऐतबार कर बैठा,
जान अपनी निसार कर बैठा ।

ओठ उसके भी थरथराते थे,
शब्द उसके भी लड़खड़ाते थे ।
साँस उसकी भी तेज चलती थी,
नैन उसके भी झिलमिलाते थे ।

दिल को वह बेक़रार कर बैठा,
जान अपनी निसार कर बैठा ।

उसने सोचा कि पास आएगा,
देख उसको वो मुस्कराएगा ।
उसको भर लेगा आ के बाहों में,
संग झूँमेगा गुनगुनाएगा ।

किसका वो इंतज़ार कर बैठा,
जान अपनी निसार कर बैठा ।

उसने जाना कि मेरी किस्मत है,
उसने सोचा कि मेरी अजमत है ।
उससे बढ़कर नहीं है दुनियाँ में,
एक वह ही तो उसकी दौलत है ।

खुद को वह शर्मसार का बैठा,
जान अपनी निसार कर बैठा ।

(27.04.2013)
सिडनी

31. अब अधर जो बोलते है.....

अब अधर जो बोलते हैं बोलने दो,
राज़ दिल का खोलते हैं खोलने दो ।
नेह की नदिया में थोड़ा साथ डूबो,
शब्दों को जो तोलते हैं तोलने दो ।
आज मौसम है हसीं रंगों भरा है,
कौन जाने कल में कैसा क्या छिपा है ।

छेड़ दो तुम आज कोई एक कहानी,
बात कोई हो नई या हो पुरानी ।
खेल बचपन के सजाओ आज सुर में,
या कि फिर दोहरा रहो अपनी जवानी ।
आज दिल में जोश है स्वर में सुधा है,
कौन जाने कल में कैसा क्या छिपा है ।

हाथ में ले आज कोई साज़ छेड़ो,
सुर सजाओ तुम कोई सा राग छेड़ो ।
गूँजने दो आज नभ में स्वर लहरियाँ,
हो के तन्मय मधु भरी आवाज़ छेड़ो ।
कह उठें कि क्या समा सुर में सजा है,
कौन जाने कल में कैसा क्या छिपा है ।

साथ अपने जो भी हो एहसान मानो,
देवों का तुमको दिया वरदान मानो ।
हैं तुम्हारी भी कोई पहचान माना,
आज केवल तुम यही पहचान जानो ।
आज सबका साथ है कितना भला है,
कौन जाने कल में कैसा क्या छिपा है ।

(30.04.2013)

सिडनी

32. आज जो भी है वो ही.....

आज जो भी है वो ही अपना है,
आज जी भर के प्यार करने दो ।
है जो एहसास तुम ही मेरे हो,
अब तो यह एतबार करने दो ।

आज ज़ुल्फों में घटाएँ भर लें,
रात काली से लगा लें काजल ।
चाँदनी आ के सजा दे तन को,
ये सितारे आ सजा दें आँचल ।

ठंड की धूप सी खिल जाऊँ मैं,
अब तो मन में बहार भरने दो ।
है जो एहसास तुम ही मेरे हो,
अब तो यह एतबार करने दो ।

डूब जाऊँ तुम्हारी आँखों में,
अपने सपनों को हक़ीक़त दे दूँ ।
भर रहें तेरे बदन की खुशबू,
अपनी साँसों को इज़ाज़त दे दूँ ।

आओ आ बाँध लो आ बाहों में,
अब तो मुझमें ख़ुमार भरने दो ।
है जो एहसास तुम ही मेरे हो,
अब तो यह एतबार करने दो ।

भूल जाओ जरा ज़माने को,
अब न कुछ मेरे सिवा याद रहे ।
मैं रहूँ और तुम ही हो अब तो,
मेरी तेरी ही जो भी बात रहे ।

वक़्त रुक जाए आज थोड़ा सा,
वक़्त को इंतज़ार करने दो ।
है जो एहसास तुम ही मेरे हो,
अब तो यह एतबार करने दो ।

(30.04.2013)
सिडनी

33. क्या कहें तुमसे प्यार है कितना.....

क्या कहें तुमसे प्यार है कितना, जान लो जैसे आसमां जितना ।

तुम ही बसते हो मेरी धड़कन में,
तुम ही बसते हो मेरे साँसों में ।
हो ख्यालों में बस तुम्हीं एक तो,
तुम ही बसते हो मेरे ख्वाबों में ।

क्या कहें तुमसे प्यार है कितना, जान लो जैसे आसमां जितना ।

साथ लेकर ही तुमको सोऊँ मैं,
साथ लेकर ही तुमको जागूँ मैं ।
रब से मांगू मैं जब भी कोई दुआ,
साथ लेकर ही तुझको माँगू मैं ।

क्या कहें तुमसे प्यार है कितना, जान लो जैसे आसमां जितना ।

तुमको देखूँ मैं रंगी सुबहों में,
तुमको देखूँ हसीन शामों में ।
मै जिधर देखूँ उधर तुमको ही,
तुमको देखूँ वफ़ा के गानों में ।

क्या कहें तुमसे प्यार है कितना, जान लो जैसे आसमां जितना ।

(28.07.2013)

सिडनी

34. न इस तरह उदास हो.....

न इस तरह उदास हो न यूँ मुझे रुलाओ तुम,
ज़रा सा पास आ मेरे मुझे गले लगाओ तुम ।

लम्बी लम्बी स्याह रात ये कभी तो जाएगी,
आ के अपनी रंगी भोर फिर से मुस्कराएगी,
गले मुझे लगा सभी विषाद भूल जाओ तुम,
ज़रा सा पास आ मेरे मुझे गले लगाओ तुम ।

तुम अकेले तो नहीं हो हम भी तेरे हमसफर,
साथ साथ चल रहें हैं चल रहे हो जिस डगर,
जो भी बात मन बसी वह हमें बताओ तुम,
ज़रा सा पास आ मेरे मुझे गले लगाओ तुम ।

रो दिये हो यदि कभी तो रो दिये हैं साथ में,
हँस दिये हो यदि कभी तो हँस दिये हैं साथ में,
अब तो खुद भी हँस रहो और हमे हँसाओ तुम,
ज़रा सा पास आ मेरे मुझे गले लगाओ तुम ।

(29.07.2013)
सिडनी

35. छोटी सी भूल की मुझे न.....

छोटी सी भूल की मुझे न इस कदर सज़ा मिले,
कि माफ़ी माँगने का भी न कोई रास्ता मिले ।

कुछ तो वफाएं होंगी मेरे नाम की भी याद कर,
मेरी वफाओं का मुझे न इस तरह सिला मिले ।

न ऐसा वक़्त आए कभी तुमसे मेरे हमसफर,
कि दर्द ही हो दर्द और साथ में गिला मिले ।

मान ले तू इस तरह कि जैसे कुछ हुआ नहीं,
मुझे ज़रा सुकूं मिले ज़रा सा हौंसला मिले ।

हँस दे मुस्करा दे तू उसी तरह से जान-ए-मन,
मेरी खताएं माँफ हों औ मुझको आसरा मिले ।

(30.07.2013)
सिडनी

36. प्यार करते हैं तुमसे हम.....

प्यार करते हैं तुमसे हम कितना,
क्या बताएँ ये तुमसे है कितना ।

तेरे बिन हम उदास रहते हैं,
सारे गम आस पार रहते हैं ।
आँसू पलकों पे आ के रुक जाते,
कभी गालों पे के आ बहते हैं ।
रोक लें चाहे उनको हम जितना,
प्यार करते हैं तुमसे हम कितना ।

तुमको देखूँ मैं उगते सूरज में,
देखूँ तुमको ही चाँद तारों में ।
जर्रे-जर्रे में तुमको ही देखूँ,
तुमको देखूँ में हर नज़ारों में ।
गिन लो चाहो तो हो सके गिनना,
प्यार करते हैं तुमसे हम कितना ।

तेरी बाँहों को ले के सोएँ हम,
आँखों में तेरी सदा जागें हम ।
मेरी धड़कन ही तेरी धड़कन हो,
रात दिन रब से यही मागें हम ।
जो भी हो सोच बस यही इतना,
प्यार करते हैं तुमसे हम कितना ।

(31.07.2013)
सिडनी

37. अब न नभ में कोई तारक.....

अब न नभ में कोई तारक और ओझल चंन्द्रमा है,
है तो नीरवता ही केवल कालिमा ही कालिमा है,
नींद में हैं सब अभी भी, वृक्षों पर खग कुल बसेरा,
यह निशा का घन अँधेरा, शुभ है केवल साथ तेरा ।

तेरी साँसों की मैं खुशबू अपनी साँसों आज़ ले लूँ,
खोल दो तुम केश अपने प्यार से जी भर के खेलूँ,
ले के पलभर को टिका लो, अपने काँधे सर ये मेरा,
यह निशा का घन अँधेरा, शुभ है केवल साथ तेरा ।

आ मिला दो धड़कनों को आज मेरी धड़कनों से,
मुक्त होने दो मुझे फिर काल के इन बन्धनों से,
बाँध लो कसकर मुझे तुम, डाल कर बाहों का घेरा,
यह निशा का घन अँधेरा, शुभ है केवल साथ तेरा ।

आओ मेरे पास आओ मुँह हथेली आज भर लूँ,
चूम लूँ अधरों को तेरे ओठों को ओठों में ले लूँ,
झाँक कर तेरे नयन फिर, खोज लूँ एक नव सवेरा,
यह निशा का घन अँधेरा, शुभ है केवल साथ तेरा ।

(03.08.2013)
सिडनी

38. अब के बिछड़े हम जाने.....

अब के बिछड़े हम न जाने फिर से कैसे कब मिलेंगे,
पुष्प अभिलाषा के अपने फिर से कैसे कब खिलेंगे ।

तुम न होते तो बताओ क्या यूँ ही हम मुस्कराते,
रंग भरते इस हृदय में पंछी से हम चहचहाते,
अब विरह की अग्नि में ही रात दिन हम तो जलेंगे,
अब के बिछड़े हम न जाने फिर से कैसे कब मिलेंगे ।

तुम न होगे तो क्या मन में मेरे होगा यह उजाला,
बिन तेरे मन मेरा होगा जैसे एक रीता सा प्याला,
फिर तो केवल नयनों से ही अश्रु झरझर कर गिरेंगे,
अब के बिछड़े हम न जाने फिर से कैसे कब मिलेंगे ।

आएगा पतझड़ औ सावन और ये मधुमास यूँ ही,
आएगी सरदी औ गरमी और शरद की रात यूँ ही,
तुम ने होगे साथ मेरे ऋतु बरस किस कर कटेंगे,
अब के बिछड़े हम न जाने फिर से कैसे कब मिलेंगे ।

सूने अपने दिन ये होंगे, लंबी–लंबी अपनी रातें,
बिन तुम्हारे किससे होंगी, मीठी–मीठी मेरी बातें,
हम तो केवल कल्पना ले पीड़ा स्मृति संग पलेंगे,
अब के बिछड़े हम न जाने फिर से कैसे कब मिलेंगे ।

(06.08.2013)
सिडनी

39. हर पल सोचूँ अबकी उनसे दिल.....

हर पल सोचूँ अबकी उनसे दिल की बातें कह जाऊँ,
मन की मन में ही रह जाए घुट घुट कर मैं रह जाऊँ ।

अबकी मिले तो कुछ भी हो ले हर हालत में अब कह देंगे,
एक ही भय है मेरे मन में उसको सुनकर क्या कह देंगे,
कैसे कह दूँ उनसे जाकर मन ही मन फिर घबराऊँ,
हर पल सोचूँ अबकी उनसे दिल की बातें कह जाऊँ ।

श्वासों की गति भी बढ़ जाती स्वेद से भर जाता मेरा तन,
दिल की धड़कन भी बढ़ जाती रह रह घबराता मेरा मन,
अपने मन की हर पीड़ा को हँसते-हँसते सह जाऊँ,
हर पल सोचूँ अबकी उनसे दिल की बातें कह जाऊँ ।

नयनों से नयना मिलते हैं फिर झुक जाते हैं रह रह कर,
जो है कहना लब रुकतें हैं फिर अकुलातो हैं रह रह कर,
ऐसा ही होता है फिर-फिर रह रह कर फिर पछताऊँ,
हर पल सोचूँ अबकी उनसे दिल की बातें कह जाऊँ ।

(07.08.2013)
सिडनी

40. हो रहे जैसे विलग हम.....

हो रहे जैसे विलग हम, अब क्या मिलना हो सकेगा ।

बिन मेरे तुम हो रहोगे,
हम भी होंगे बिन तुम्हारे ।
अब तो हम वैसे हो होंगे,
एक नदी के दो किनारे ।

तुम बताओ इस तरह क्या, साथ चलना हो सकेगा,
हो रहे जैसे विलग हम, अब क्या मिलना हो सकेगा ।

अपनी स्मृति में बसेगी,
एक अधूरी ही कहानी ।
मन सदा ही टीस होगी,
आँखों में भर होगा पानी ।

जैसे खिलते आज तक थे, फिर ये खिलना हो सकेगा,
हो रहे जैसे विलग हम, अब क्या मिलना हो सकेगा ।

हर खिज़ा आकर रुलाती,
अब रुलायेंगी बहारें ।
देव जब रूठे हो अपने,
बोलो फिर किसको पुकारें ।

जिस तरह अब तक फलें हैं, ऐसे फलना हो सकेगा,
हो रहे जैसे विलग हम, अब क्या मिलना हो सकेगा ।

(07.08.2013)

सिडनी

41. इश्क़ है तुझसे मुझी को.....

इश्क़ है तुझसे मुझी को आज़ यह ऐलान कर दूँ,
हँस के तू अपना कहे जो ज़िंदगी तेरे नाम कर दूँ ।

तू जो कह दे आसमां से तोड़ लाऊँ मैं सितारे,
या कहे तो राह में तेरे बिछा दूँ फूल सारे ।
हो रहूँ राझाँ कि या फिर हो रहूँ महिवाल सा मैं,
या कहे फरहाद बनकर काट लाऊँ नद किनारे ।
मुस्करा कर देख ले तो खुद को मैं कुर्बान कर दूँ,
हँस के तू अपना कहे जो ज़िंदगी तेरे नाम कर दूँ ।

रिंद कह ले या मुझे कह ले कोई तेरा दीवाना,
हँस ले मुझ पे कोई चाहे या हँसे सारा ज़माना ।
तू ही मेरा जाम है और तू ही है मेरा ही साक़ी,
तू ही मेरा मयकदा है एक तू मेरा ठिकाना ।
तेरे नयनों की मदिर ले मैं सुबह से शाम कर दूँ,
हँस के तू अपना कहे जो ज़िंदगी तेरे नाम कर दूँ ।

है वफ़ा की तू ही मूरत दूर तुझसे हर बुराई,
जब हो दूरी एक पल की तो लगे लंबी जुदाई ।
क्या कहूँ तेरे लिए मैं लफ्ज़ मेरे हैं नाकाफ़ी,
तू खुदा का नूर है और तू खुदा की है खुदाई ।
तू तो मेरा रब है मानूँ ज़िक्र यह सरेआम कर दूँ,
हँस के तू अपना कहे जो ज़िंदगी तेरे नाम कर दूँ ।

(10.08.2013)

सिडनी

42. चल रहे हैं गिर पड़े और उठ.....

चल रहे हैं गिर पड़े और उठ लिए,
चोट लगी लड़खड़ाए और चल दिए ।
है कहीं भी चैन क्या कोई आराम है,
ओ हसीन ज़िंदगी तुझे सलाम है ।

खुद से खुद की बात ही बोलते हुए,
रख रहे हैं हर क़दम तौलते हुए ।
कौन सा ये ठौर है क्या मकाम है,
ओ हसीन ज़िंदगी तुझे सलाम है ।

मन में प्रश्न बार बार कौंधते हुए,
अपनी धुन में बार बार सोचते हुए ।
कौन सा सबक है ये क्या पयाम है,
ओ हसीन ज़िंदगी तुझे सलाम है ।

पीछे देखते है क्या बाक़ी रह गया,
या समय की बाढ़ में सारा ढह गया ।
क्या बहा है और ये अभी निशान है,
ओ हसीन ज़िंदगी तुझे सलाम है ।

क्यों शुरू है और ये कैसे है खतम,
सत्य क्या है और ये कैसा है भरम ।
मन सदा ही झींकता और हैरान है,
ओ हसीन ज़िंदगी तुझे सलाम है ।

जानते हैं मर्त्य हैं तो भी क्या हुआ,
कुछ नहीं है बाद में तो भी क्या हुआ ।
ले के चाहतों को मन गुलाम है,
ओ हसीन ज़िंदगी तुझे सलाम है ।

(11.08.2013)
सिडनी

43. थक गया हूँ मैं तो फिर से.....

थक गया हूँ मैं तो फिर से, बाँह दो विश्राम कर लूँ,
हर व्यथा को भूल जाऊँ फिर से सुखमय शाम कर लूँ ।

तेरी बाहों में ही आकर काल के रुकते हैं यह क्षण,
मन क्षितिज से लुप्त होते वाष्प के ठहरे जलद कण,
पल को कालातीत होकर चित्त को अभिराम कर लूँ,
थक गया हूँ मैं तो फिर से, बाँह दो विश्राम कर लूँ ।

भर लो आलिंगन में जब भी दूर हों अवसाद सारे,
भूल जाऊँ हर कलुष फिर हों हसीं फिर से नज़ारे,
दूर हो सारी शिथिलता स्फूर्ति अपने नाम कर लूँ,
थक गया हूँ मैं तो फिर से, बाँह दो विश्राम कर लूँ ।

सत्य के कितने ही शोधक कल्पना का मैं पुजारी,
भर लूँ अपनी चेतना में ओ प्रिये फिर छवि तुम्हारी,
भर के स्मृति में तुझे सौन्दर्य का अभिज्ञान कर लूँ,
थक गया हूँ मैं तो फिर से, बाँह दो विश्राम कर लूँ ।

(12.08.2013)
सिडनी

44. क्या कहे राह बड़ी मुश्किल.....

क्या कहे राह बड़ी मुश्किल है, क्या कहे दूर तेरी मंजिल है,
थोड़ा सा जोश हो जुनूं तुझमे, तेरे कदमों तले ही मंजिल है,

तू दिल में यह ख़्याल लेकर चल,
तू दिल में इंतज़ार लेकर चल ।

कब किधर राह में काँटे होंगे या बिछीं कदमों तले कलियाँ हों,
न जाने हर तरफ ही खार मिले या सजी चारों तरफ दुनियाँ हो,

तू दिल में एक बहार लेकर चल,
तू दिल में इंतज़ार लेकर चल ।

एक सुरीली सी सदा तू भी सुने या कि फिर राह में वीराना हो,
या कि फिर गीत कहीं और सजे कि तुझे खुद ही गीत गाना हो,

तू दिल में एक सितार लेकर चल,
तू दिल में इंतज़ार लेकर चल ।

तू अकेला ही सही क्या गम है तू तो खुद में ही एक तराना है,
ज़र्रा ज़र्रा है मुस्कुराता हुआ और तेरा दिल भी तो दीवाना है,

तू दिल में अपने प्यार लेकर चल,
तू दिल में इंतज़ार लेकर चल ।

(13.08.2013)

सिडनी

45. मेरे साथ आओ.....

मेरे साथ आओ, मेरे साथ आओ,
मेरे साथ आओ, मेरे साथ आओ ।

मेरे साथ आओ हँस मुस्कराएँ,
चहकें विहग से कोई गीत गाएँ,
दाँतों के मोती की माला सजाओ,
मेरे साथ आओ, मेरे साथ आओ ।

मेरे पास आओ चलो चुप कराएँ,
भूख और पीड़ा से उठती कराहें,
मानव हो मानव सा होके दिखाओ,
मेरे साथ आओ, मेरे साथ आओ ।

मेरे साथ आओ चमन को खिलाएँ,
मिलकर वतन को सुन्दर बनाएँ,
तारों से नभ में सदा झिलमिलाओ,
मेरे साथ आओ, मेरे साथ आओ ।

(13.08.2013)
सिडनी

46. ले के बदली की ओट जा के.....

ले के बदली की ओट जा के चाँद छिप जा रे,
मेरे पहलू में आज़ मेरा प्यार बैठा है ।
तू इतनी मान ले मेरी, अरज़ न ठुकरा रे,
मेरे पहलू में आज़ मेरा यार बैठा है ।

अभी तो फूल की तरह मुझे महकना है,
अभी तो पंछी की तरह मुझे चहकना हैं ।
जैसे बरसात की नदिया में उछलता पानी,
आज मुझको भी उसी तरह से मचलना है ।

ओ मुझे सुन के न तू, इस तरह से मुस्का रे,
मेरे दिल में भी आज एक खुमार बैठा है ।
ले के बदली की ओट जा के, चाँद छिप जा रे,
मेरे पहलू में आज़ मेरा प्यार बैठा है ।

अभी तो प्यार की अपनी शुरू कहानी है,
अभी तो दास्तान दिल भी की सुनानी है ।
कैसे कटती थी अकेली मेरी तन्हाई में,
अभी तो कहनी मुझे उससे हर कहानी है ।

कह रहा बार बार, आज कुछ तरस खा रे,
मेरा दिल भी ये यूँ ही बेक़रार बैठा है ।
ले के बदली की ओट जा के चाँद छिप जा रे,
मेरे पहलू में आज़ मेरा प्यार बैठा है ।

अभी तो हुस्न को भी हौले से बिखरना है,
अभी तो इश्क को भी मस्ती में बरसना है ।
एक चेहरा है जिसे देखता है तू जी भर,
उसे भी उठ के आज तेरे सा चमकना है ।

न मुझको देख यूँ तू, न ही अब नज़र आ रे,
कोई मेरा भी किए इंतज़ार बैठा है ।
ले के बदली की ओट जा के चाँद छिप जा रे,
मेरे पहलू में आज़ मेरा प्यार बैठा है ।

(14.08.2013)
सिडनी

47. जग रहे मेरे ज़ज़बात सुनो.....

जग रहे मेरे ज़ज़बात, सुनो तरसाओ ना,
हो रही प्रिये अब रात, सुनो अब जाओ ना ।

समझ भी लो हालात, सुनो मुस्काओ ना,
हो रही प्रिये अब रात, सुनो अब जाओ ना ।

हैं खिले नहीं जलजात, सुनो समझाओ ना,
हो रही प्रिये अब रात, सुनो अब जाओ ना ।

हे शेष अभी मेरी बात, सुनो सुन जाओ ना,
हो रही प्रिये अब रात, सुनो अब जाओ ना ।

है कोई नहीं व्याघात, सुनो झुठलाओ ना,
हो रही प्रिये अब रात, सुनो अब जाओ ना ।

प्यार की दूँ सौगात, सुनो इठलाओ ना,
हो रही प्रिये अब रात, सुनो अब जाओ ना ।

करके तुम प्रतिवाद, सुनो बहकाओ ना,
हो रही प्रिये अब रात, सुनो अब जाओ ना ।

(15.08.2013)
सिडनी

48. सत् सत्ता जन सत्ता.....

सत् सत्ता, जन सत्ता, हाथ थाम, हो साथ–साथ,
सत् मुक्ति, जन मुक्ति, कटें पाश, निर्भय समाज ।
सत् घोष, जन घोष, गूँजे साथ, जय तुमुलनाद,
सत् वित्ति, जन वित्ति, उठो उठो, जागो रे आज ।

(15.08.2013)
सिडनी

49. गिर पड़ा तो क्या हुआ.....

गिर पड़ा तो क्या हुआ शक्ति भर फिर से उठ,
समर अभी चुका नहीं चल रहा अभी भी युद्ध ।

सोच क्या कि तेरे पास आएगा कोई यहाँ,
घाव तेरे पाँछ कर सुखाएगा कोई यहाँ,
क्षत विक्षत हैं सब यहाँ हैं यहाँ सभी ही विद्ध,
समर अभी चुका नहीं चल रहा अभी भी युद्ध ।

हारकर न बैठ जा आस को जगाए रख,
शर्म से झुका न सर सर को तू उठाए रख,
अश्रु अपने पोंछ ले धीर धर न हो ही क्रुद्ध,
समर अभी चुका नहीं चल रहा अभी भी युद्ध ।

इस निराल युद्ध में कौन थक न गिर गया,
श्रद्ध वीर है वही गिर के फिर से उठ गया,
सत्य इसको जान ले जान ले इसे ही सिद्ध,
समर अभी चुका नहीं चल रहा अभी भी युद्ध ।

(17.08.2013)
सिडनी

50. सत्य तुझको कैसे जानूँ.....

सत्य तुझको कैसे जानूँ,
मौन में ही तुझको मानूँ ।

सब कहें न ही गंध तुझमें और है न ही रूप तेरा,
है न कोई स्वर ही तुझमें और न ही स्पर्श तेरा,
सत्य तुझको कैसे जानूँ,
मौन में ही तुझको मानूँ ।

तत्वविद की चेतना में है कि कवि की वेदना में,
क्या छिपा तू ही बता दे भक्त की ही भावना में,
सत्य तुझको कैसे जानूँ,
मौन में ही तुझको मानूँ ।

ब्रह्म कहते हैं तुझे और कह रहे तुझको अनश्वर,
और मानें तुझको निर्गुण फिर कहें तू है अगोचर,
सत्य तुझको कैसे जानूँ,
मौन में ही तुझको मानूँ ।

(18.08.2013)
सिडनी

51. कभी शाम आके हँसा रही.....

कभी शाम आके हँसा रही कभी शाम आके रुलाए है,
कभी भूलता सा हूँ मैं तुझे कभी याद तेरी ही आए है ।

इस दिल का हाल भी क्या कहूँ ख़ुद मैं ही अब हैरान हूँ,
कभी फिर रहा है दरबदर कभी पास ही से न जाए है ।

कहने को सूरज है वहीं पर फ़र्क फिर भी है वक़्त का,
कभी घर से राहें दीखतीं कभी घर की राह दिखाए है ।

जैसा था मिलना मिल गया ये तो नसीब की बात है,
कभी सबको देकर खा रहे कभी भूखा ही रह जाए है ।

अब क्या गिला शिकवा करें किसको कहें हम दोस्ती,
कभी अपने ही सब ग़ैर से कभी कोई साथ निभाए है ।

(19.08.2013)
सिडनी

52. तीखे तीखे मद भर झील से.....

तीखे तीखे मद भरे झील से तेरे नयन,
देख देख उर उठे मीठी मीठी सी चुभन ।

ये भरे हैं रंग से,
ये भरे हैं राग से ।
देखता हूँ तो लगे,
ये भरे हैं ख़्वाब से ।
सज रहीं तड़ाग में जैसे सूर्य की किरन,
तीखे तीखे मद भरे झील से तेरे नयन ।

जैसे अब हवा चली,
जैसे अब घटा उठी ।
लग रहा है जैसे के,
कोई बांसुरी बजी ।
लग रहा है बज रही जैसे कोई जलतरंग,
तीखे तीखे मद भरे झील से तेरे नयन ।

अब कहीं न जाऊँ मैं,
इनमें डूब जाऊँ मैं ।
भूल जाऊँ सारा जग,
ख़ुद को भी भुलाऊँ मैं ।
आ के मन में सज रहें जैसे सारे सातों रंग,
तीखे तीखे मद भरे झील से तेरे नयन ।

(22.08.2013)
सिडनी

53. चल रहो यदि चल सको तो आ.....

चल रहो यदि चल सको तो आ पकड़ लो बाँह मेरी,
अन्यथा जाने दो मुझको अब मुझे जाना ही होगा ।

जानता हूँ बिन तुम्हारे मेरा यह जीवन भी क्या है,
तेल बाती है सभी ही फिर भी बिन जलता दिया है ।
पर विविश हूँ लक्ष्य जीवन के सभी अब तक अधूरे,
आगे बढ़कर अब मुझे कुछ न कुछ पाना ही होगा ।
चल रहो यदि चल सको तो आ पकड़ लो बाँह मेरी,
अन्यथा जाने दो मुझको अब मुझे जाना ही होगा ।

सत्य मन से चाहता हूँ साथ मेरे तुम भी आओ,
राह में संग संग चलो तुम साथ मेरे गुनगुनाओ ।
साथ यदि मिल जाएगा तो युगल स्वर में गीत होंगे,
अन्यथा मुझको अकेले राह में गाना ही होगा ।
चल रहो यदि चल सको तो आ पकड़ लो बाँह मेरी,
अन्यथा जाने दो मुझको अब मुझे जाना ही होगा ।

यह नहीं, नहीं जानता हूँ क्या विविशता है तुम्हारी,
जानता हूँ तुम भी जानो क्या है अब हालत हमारी ।
पर यह निर्णय की घड़ी है, जानता हूँ है कठिन पर,
साथ यदि तुमको निभाना साथ तो आना ही होगा ।
चल रहो यदि चल सको तो आ पकड़ लो बाँह मेरी,
अन्यथा जाने दो मुझको अब मुझे जाना ही होगा ।

(23.08.2013)
सिडनी

54. ज़िंदगी की राह क्या इतनी.....

ज़िंदगी की राह क्या इतनी सुगम है,
है नहीं गिरने का भय या है तो कम है ।

है नहीं जिस पर कभी भी शूल चुभते,
है नहीं जिस पर कभी भी पाँव दुखते ।
है नही जिस पर कभी भी कोई बाधा,
है नहीं जिस पर कभी भी हम न रुकते ।

ज़िंदगी की राह क्या इतनी सुगम है,
है नहीं गिरने का भय या है तो कम है ।

है नहीं जिस पर कभी भी कसमसाते,
है नहीं जिस पर कभी भी स्वेद आते ।
है नहीं जिस पर कभी भी उर में पीड़ा,
है नहीं जिस पर कभी आँसू बहाते ।

ज़िंदगी की राह क्या इतनी सुगम है,
है नहीं गिरने का भय या है तो कम है ।

है नहीं जिस पर कभी भी ग्रीष्म रेले,
है नहीं जिस पर कभी भी शिशिर झेले ।
है नहीं जिस पर कभी भी तम न होता,
है नहीं जिस पर कभी भी हम अकेले ।

ज़िंदगी की राह क्या इतनी सुगम है,
है नहीं गिरने का भय या है तो कम है ।

(24.08.2013)
सिडनी

55. राह जिस तुम चल रहे हो.....

राह जिस तुम चल रहे हो साथ हम भी चल रहे,
आँच जिस पर तप रहे हो साथ हम भी तप रहे ।
थक रहे जैसे कदम अब राह में चलते तुम्हारे,
जान लो अपने कदम भी साथ वैसे ही थक रहे ।
जानकार तेरी व्यथा अपनी व्यथा हम क्या कहें,
जानकर तेरी कथा अपनी कथा हम क्या कहें ।

है तुम्हें अवसाद जो अवसाद ही वह हमको घेरे,
है तुम्हें जो प्यास वो ही प्यास ही तो हमको घेरे ।
कौन जाने है अभी भी ऐसे कितना और चलना,
है तुम्हें एहसास जो एहसास ही तो हमको घेरे ।
जानकर तेरी व्यथा अपनी व्यथा हम क्या कहें,
जानकर तेरी कथा अपनी कथा हम क्या कहें ।

जो हृदय में दुःख तुम्हारे है वही तो दुःख हमारा,
झर रहे रह रह नयन हैं बह रही अपने भी धारा ।
साथ हो कोई तो अपना और हमें मिल जाए मंजिल,
ढूँढ़ते फिरते हो जो तुम ढूँढ़ते हम भी सहारा ।
जानकर तेरी व्यथा अपनी व्यथा हम क्या कहें,
जानकर तेरी कथा अपनी कथा हम क्या कहें ।

(25.08.2013)
सिडनी

56. काहे तू शोक करे नैनन.....

काहे तू शोक करे, नैनन नीर भरे ।

सुन ओ सखी री मोरी तू बतियाँ,
रोएगी फिर तू आएँगी अखियाँ,
काहे को दर्द मेरे, नैनन नीर भरे ।

दूर देश तेरे पिया की नगरिया,
लौट के आएगा फिर सांवरिया,
थोड़ा तो धीर धरे, नैनन नीर भरे ।

अब के जो आए लौट के फिर से,
जाने न दीजो वापिस फिर से,
जाए पिया तो लड़े, नैनन नीर भरे ।

(25.08.2013)
सिडनी

57. फिर से जा निशा हटी.....

फिर से जा निशा हटी,
फिर से आ विभा उठी ।
छा गयीं धरा किरण,
सज गयी गली गली ।

याद तेरी आ रही,
आ मुझे सता रही ।

फिर से आ हवा चली,
फिर से आ घटा उठी ।
झूमते हैं गुल्म तरु,
जग गए हैं अब सभी ।

याद तेरी आ रही,
आ मुझे सता रही ।

फिर से गा उठी शुकी,
फिर से गा उठी पिकी ।
नभ भी आज गा रहा,
गा रहीं विहग अली ।

याद तेरी आ रही,
आ मुझे सता रही ।

फिर से पा कोई हँसी,
फिर से पा कोई खिली ।
पोर पोर खुल गए,
खिल गई हों पंखुड़ी ।

याद तेरी आ रही,
आ मुझे सता रही ।

(26.08.2013)

सिडनी

58. आज फिर नव गान छेड़ो.....

आज फिर नव गान छेड़ो,
एक नयी सुर तान छेड़ो ।

गूँजने दो फिर सदाएँ,
गूँजने दो फिर दिशाएँ ।
एक नया सा राग लेकर,
मस्त होने दो फिजाएँ ।
आज फिर अविराम छेड़ो,
एक नयी सुर तान छेड़ो ।

जागने दो अब विभा को,
लुप्त होने दो निशा को ।
सुर सजाओ आ जगा लो,
सुप्त होती चेतना को ।
आज़ फिर मुस्कान छेड़ो,
एक नयी सुर तान छेड़ो ।

फिर से कोई बात बोलो,
फिर से कोई राज़ खोलो ।
कह रहो अपनी ही केवल,
आज़ मत गैरों को तोलो ।
आज फिर अभिराम छेड़ो,
एक नयी सुर तान छेड़ो ।

(27.08.2013)
सिडनी

59. मन में नयी उमंग के.....

मन में नयी उमंग के तूफां मचल पड़े,
आई ख़ुशी तो आँख से आँसू निकल पड़े ।

ये जैसे कुछ अजीब सा जादू सा हो गया,
लब थरथराए आप ही हम आप हँस पड़े ।

पलकों ने कीं थी मिन्नतें ठहरो सुनो ज़रा,
चुपके से अश्क आए और बाहर निकल पड़े ।

मेरे बदन की शाख को आ किसने छू लिया,
ये फिर से आज़ डाल पर गुंचे निकल पड़े ।

(29.08.2013)
सिडनी

60. इक बात मैं कहूँ सुन लो ज़रा.....

इक बात मैं कहूँ सुन लो ज़रा मुझे,
है तुमसे प्यार है कह दो ज़रा मुझे ।

मैं मानता तुम्हें तुम कोई फूल हो,
तुम सबसे ख़ास हो तुम मेरे नूर हो,
इक बात मैं कहूँ जानो ज़रा मुझे,
है तुमसे प्यार है कह दो ज़रा मुझे ।

मैं मानता तुम्हें हो टुकड़ा चाँद का,
तुम मेरी भोर हो हो दृश्य शाम का,
इक बात मैं कहूँ मानों ज़रा मुझे,
है तुमसे प्यार है कह दो ज़रा मुझे ।

मैं मानता तुम्हें तुम मेरी प्यास हो,
गाता हूँ हर घड़ी तुम वह ही राग हो,
इक बाते मैं कहूँ सोचो ज़रा मुझे,
है तुमसे प्यार है कह दो ज़रा मुझे ।

(30.08.2013)
सिडनी

61. या मुझे तू आज़ अपने......

या मुझे तू आज़ अपने अंग भर ले
या बता दे प्यार के काबिल नहीं मैं ।

मैं रहा हूँ साथ जिस पथ तुम रहे हो,
चल रहा हूँ साथ जब पथ पर चले हो ।
हो गया धीरे से मैं भी तुम जो धीरे,
रुक गया मैं भी तभी जब तुम रुके हो ।

या मुझे तू आज़ अपने अंग भर ले
या बता दे प्यार के काबिल नहीं मैं ।

कब न मैंने पथ के तेरे शूल छाँटे,
बढ़ निकाले पग से तेरे कब न काँटे ।
हो दुखी तुम और मैं हँसता रहा कब,
कब न मैंने साथ तेरे अश्रु साथ बाँटे ।

या मुझे तू आज़ अपने अंग भर ले
या बता दे प्यार के काबिल नहीं मैं ।

कह दिया तूने तभी गरदन उठाई,
कह दिया तूने तभी गरदन झुकाई ।
चुप रहो तूने कहा चुप हो रहा मैं,
मुस्कराया मैं तभी तुम मुस्कराईं ।

या मुझे तू आज़ अपने अंग भर ले
या बता दे प्यार के काबिल नहीं मैं ।

(31.08.2013)
सिडनी

62. मन के भेद खुल गए तुम.....

मन के भेद खुल गए, तुम जो मुस्कुरा गए,
हम भी आज़ खिल गए, तुम जो पास आ गए ।

तरंग में है तन बदन तरंग मेरी आस में,
उमंग में है मन मेरा उमंग मेरी श्वास में,
अपने नैन मिल गए, तुम जो मुस्कुरा गए,
हम भी आज़ खिल गए, तुम जो पास आ गए ।

एक सितार सा बजा बजी सी कोई बाँसुरी,
है खिला कमल कहीं खिल गई कोई कली,
मन को चैन मिल गए, तुम जो मुस्करा गए,
हम भी आज़ खिल गए, तुम जो पास आ गए ।

फिर से आज़ फूल फूल भँवरा घूमने लगा,
मुझे लगा कि जैसे यह ज़हान झूमने लगा,
हम भी साथ मिल गए, तुम जो मुस्करा गए,
हम भी आज़ खिल गए, तुम जो पास आ गए ।

(01.09.2013)
सिडनी

63. अब तो देखो देर हो ली.....

अब तो देखो देर हो ली, अब उठो जागो ज़रा,
प्रार्थना में तुम सजाओ, शक्ति भर दे ऐ ख़ुदा ।

आस और विश्वास माँगो,
फूर्ति और उल्लास माँगो ।
माँग लो थोड़ी सी करुणा,
नेह का एहसास माँगो ।
दो दया का दान हमको, दान दे दो रब वफ़ा,
प्रार्थना में तुम सजाओ, शक्ति भर दे ऐ ख़ुदा ।

शौर्य और आह्लाद माँगो,
प्रेम और अनुराग माँगो ।
माँग लो थोड़ी सी शुचिता,
शीलता भी साथ माँगो ।
सौंदर्य का अभिज्ञान दो, औदार्य भी दे दो ज़रा,
प्रार्थना में तुम सजाओ, शक्ति भर दे ऐ ख़ुदा ।

हर्ष और उत्साह माँगो,
धैर्य और सौहाद्र माँगो ।
माँग लो संवेदना तुम,
संग प्रभु का राग माँगो ।
हे प्रभू दो भक्ति ऐसी, तुम रहो मन में सदा,
प्रार्थना में तुम सजाओ, शक्ति भर दे ऐ ख़ुदा ।

(02.09.2013)

सिडनी

64. अब न रह तू नींद में.....

अब न रह तू नींद में जाग उठ चल रे चल,
पथ तुझे पुकारता अब न रुक चल रे चल ।

हवा भी बार–बार रुक यही सदा सुनाएगी,
ये लगे न अड़चनें तो आ खिज़ा सताएगी,
रह तू अपनी मौज़ में तू न झुक चल रे चल,
पथ तुझे पुकारता अब न रुक चल रे चल ।

जो भी पल गुज़र गए अब कभी न आएँगे,
पर ये याद आ तुझे स्वप्न बन सताएँगे,
गुनगुना ले तू भी रे रह न चुप चल रे चल,
पथ तुझे पुकारता अब न रुक चल रे चल ।

किसी ने साथ दे दिया तो कोई दूर हो गया,
और कोई मिल गया तो कोई कहीं खो गया,
ज़िंदगी तो है यही कह न कुछ चल रे चल,
पथ तुझे पुकारता अब न रुक चल रे चल ।

(03.09.2013)
सिडनी

65. मिट्टी की सौंधी ख़ुशबू.....

मिट्टी की सौंधी ख़ुशबू, वर्षा का रिमझिम जादू,
मुझसे कहता क्यों चुप है, आ तू भी आ हरसा जा ।

हैं ओठों पर मुस्कानें तन पर केवल कच्छे,
आ पानी के गड्ढों पर वे छप-छप करते बच्चे,
छप-छप वैसा तू कर ले, उनके जैसा छपका जा,
मुझसे कहता क्यों चुप है, आ तू भी आ हरसा जा ।

टप-टप वर्षा की बूँदें तिक धिन में गाता स्वर है,
नीचे है अपनी धरती, ऊपर अपना अम्बर है,
टप-टप सा तू भी कर ले, तू भी सुर में कुछ गा जा,
मुझसे कहता क्यों चुप है, आ तू भी आ हरसा जा ।

तू भी घर से बाहर आ, मुझमें आज़ नहा ले,
हों संगी साथी जितने, उनको भी पास बुला ले,
तू भी रिमझिम सा होले, आ मधु जैसा बरसा जा,
मुझसे कहता क्यों चुप है, आ तू भी आ हरसा जा ।

(04.09.2013)
सिडनी

66. एक बार तो कह दो मुझे.....

एक बार तो कह दो मुझे, हाँ तुमसे मुझको प्यार है,
तुम ही तो मेरी ज़िंदगी, तुमसे हंसी संसार है ।

हम भी तो तुमको रात दिन सोचा किए तेरी तरह,
हम भी तो तुमको रात दिन चाहा किए तेरी तरह ।
तुम ही नहीं हो सिर्फ़ जो जागा किए हो रात भर,
हम भी तो रातें जागकर काटा किए तेरी तरह ।
जब तुम नहीं बेचैन हम, तुम सामने तो करार है,
तुम ही तो मेरी ज़िंदगी, तुमसे हंसी संसार है ।

हमने भी तेरी ही तरह सपने सजाए रात-ओ-दिन,
हमने भी तेरी ही तरह आँसू बहाए रात-ओ-दिन ।
एक दिन तो ऐसा आएगा चाहोगे आ तुम भी मुझे,
हमने भी यह ही सोचकर ऐसे बिताए रात-ओ-दिन ।
तुम ही तो मेरे जानेमन, तुम ही पे ये जाँ निसार है,
तुम ही तो मेरी ज़िंदगी, तुमसे हंसी संसार है ।

तुम ही हमें मिल जाओ बस रोज़े किए तेरी तरह,
तुम ही हमें मिल जाओ बस कलमें पढ़े तेरी तरह ।
सिर्फ़ तुमने ही नहीं सजदे में माँगा है हमें,
हमने भी तुम मिल जाओ बस सजदे किए तेरी तरह ।
जब तुम नहीं तो है खिज़ा, जब साथ तुम तो बहार है,
तुम ही तो मेरी ज़िंदगी, तुमसे हंसी संसार है ।

(05.09.2013)
सिडनी

67. मैं कौन हूँ क्या हूँ बटोही.....

मैं कौन हूँ क्या हूँ बटोही, जानकर भी क्या करोगे,
नाम क्या है रूप क्या पहचान कर भी क्या करोगे।

जान लो इतना ही कवि हूँ शब्द लय में बोलते हैं,
गौर से यदि तुम सुनो तो भाव मन का तौलते है ।
बात हो सुख की या दुःख की साथ में तेरे सदा से,
पीड़ा और उल्लास में बन गीत ग्रीवा खोलते हैं ।
संग मैं हूँ या नहीं यह भान कर भी क्या करोगे,
नाम क्या है रूप क्या पहचान कर भी क्या करोगे।

कौन जाने राह पर कब बाग़ वन मधुकर बसे हों,
या हों केवल खार प्रस्तर कंटकों के शर सजे हों ।
जो भी हो जैसा भी हो पर सहजता से निकलना,
यह तभी संभव है जब उर में सुरीले सुर सजे हों ।
सत्य है इस बात का अभिमान कर भी क्या करोगे,
नाम क्या है रूप क्या पहचान करभी क्या करोगे ।

जैसा भी यह पथ अकेले ही तुम्हें तो पार करना,
है तुम्हें हर आ रही बाधा से भी हर पल संभलना ।
साथ तेरे कुछ नहीं इन गीतों को संबल समझ ले,
जब लगे हो साथ कोई इनको अपने सुर में भरना ।
उन पलों में और का अवधान कर भी क्या करोगे,
नाम क्या है रूप क्या पहचान करभी क्या करोगे ।

(06.09.2013)
सिडनी

68. मैं खड़ा प्रभु द्वार तेरे.....

मैं खड़ा प्रभु द्वार तेरे सोचता क्या दान माँगू,
दे रहे तुम तो अनवरत दो दया का दान माँगू ।

भूले को मिल जाए मंज़िल डूबते को हो सहारा,
ढूँढते मिल जाए जो भी माँझी को भी हो किनारा,
सबकी पीड़ा तुम हरो प्रभु, मैं यही बरदान माँगू,
दे रहे तुम तो अनवरत दो दया का दान माँगू ।

कोई भी भूले न तुमको और बिसराए कभी ना,
पाप की छाया कलुषता पास भी आए कभी ना,
हो सभी की लौ ही तुझमें तेरा ही अवधान माँगू,
दे रहे तुम तो अनवरत दो दया का दान माँगू ।

हो न मरुथल इस तरह के अश्रु अपने हम बहाएँ,
देना न प्रभु ऐसे उपवन ध्येय अपना भूल जाएँ,
दो प्रभू हमको सुमति दो मैं यही अविराम माँगू,
दे रहे तुम तो अनवरत दो दया का दान माँगू ।

(06.09.2013)
सिडनी

69. नीरव निशीथ की बेला.....

नीरव निशीथ की बेला, घन तम में मैं हूँ अकेला,
चुपके से प्रिय तू आ जा, आ दीपक राग सुना जा ।

हाथों से होती खनखन पैरों से होती छनछन,
आ ओठों पर मुस्कानें तेजी से होती धड़कन,
अम्बर तारों का मेला, घन तम में मैं हूँ अकेला,
चुपके से प्रिय तू आ जा, आ दीपक राग सुना जा ।

ना निंदिया भी तो आती आ तेरी याद सताती,
तेरी छवि आँखों आगे आ आती रोज़ रुलाती,
तेरी स्मृति का रेला, घन तम में मैं हूँ अकेला,
चुपके से प्रिय तू आ जा, आ दीपक राग सुना जा ।

दिन सूने–सूने कटते कटतीं सब सूनी रातें,
अब तो यह आलम मेरा अपने से करते बातें,
मेरे मन ने सब झेला, घन तम में मैं हूँ अकेला,
चुपके से प्रिय तू आ जा, आ दीपक राग सुना जा ।

(07.09.2013)
सिडनी

70. मैंने कब ये कहा है कमी.....

मैंने कब ये कहा है कमी ही नहीं,
साथ तेरे मगर वो खली ही नहीं ।

साथ चलतीं थीं मेरे भी तनहाइयाँ,
संग मेरे भी ग़म की थीं परछाईयाँ,
साथ तेरा मिला है ये जब से मुझे,
संग मेरे तो फिर वे चलीं ही नहीं ।

जब से आँखों में तूने सजाया मुझे,
अपने दिल के जहाँ में बसाया मुझे,
मैंने देखा है जब से ये कूचा तेरा,
मैंने देखी कोई और गली ही नहीं ।

एक तमन्ना थी मेरी तेरा साथ हो,
साथ मेरे सदा ही तेरा प्यार हो,
जब से पाया है मैंने तुझे ओ सनम,
है तमन्ना कोई अधखिली ही नहीं ।

(08.09.2013)
सिडनी

71. अब तो जागो हे धरा सुत.....

अब तो जागो हे धरा सुत, देश की संतान जागो,
देखते हैं आस से सब, देश के ओ प्राण जागो ।

जग उठे मिलकर सभी तो, देश सारा जग उठेगा,
चल पड़े यदि साथ मिलकर, देश सारा चल पड़ेगा,
देश गौरव है तुम्हीं से, देश के अभिमान जागो,
देखते हैं आस से सब, देश के ओ प्राण जागो ।

मिल के सारे ठान लो तो नभ को भी नीचे झुका दो,
तुम जो चाहो तो तिरंगा नभ में ऊँचे कर सजा दो,
देश का निर्माण तुमसे, देश के उत्थान जागो,
देखते हैं आस से सब, देश के ओ प्राण जागो ।

हो तरंगित यह उदधि भी साथ में जब मुस्कराओ,
फूल खिल जाते सभी जब एक सुर में गीत गाओ,
देश के ओ स्वस्ति गीतो, देश के अरमान जागो,
देखते हैं आस से सब, देश के ओ प्राण जागो ।

(08.09.2013)
सिडनी

72. बैठे रहो कुछ और पल.....

बैठे रहो कुछ और पल तुमको नज़र भर देख लूँ,
रुक रहो कह दो न चल तुमको जिग़र भर देख लूँ ।

तेरे स्वर से यह लगे जैसे बजी हो जल तरंग,
अपनी चितवन में छिपाए मेरे सारे राग रंग ।
झर रहा उल्लास का मन में मेरे झरना कोई,
जान लो पतझड़ पे जैसे आ खिला हो नव बसंत ।
बैठे रहो कुछ और पल तुमको नज़र भर देख लूँ,
रुक रहो कह दो न चल तुमको जिग़र भर देख लूँ ।

श्वेत चेहरा चंद्रमा सा चन्द्रिका की छवि लिए,
मंद गति की श्वास में हो तुम सुमन सौरभ लिए ।
तन में स्पर्शन से लगता कोई जादू सा हुआ,
किस तरह प्रतिरोम मेरे कौन सा अमृत पिए ।
बैठे रहो कुछ और पल तुमको नज़र भर देख लूँ,
रुक रहो कह दो न चल तुमको जिग़र भर देख लूँ ।

पास में जब तुम न हो कितना अधूरापन मुझे,
कैसा अपना सत्व खोता प्राण लगता अब खिंचे ।
है यही चिरप्यास मेरी हम न हों विलगित कभी,
मैं रहूँ जब तक धरा पर मुझको तेरा संग मिले ।
बैठे रहो कुछ और पल तुमको नज़र भर देख लूँ,
रुक रहो कह दो न चल तुमको जिग़र भर देख लूँ ।

(09.09.2013)
सिडनी

73. हे प्रभू वरदान दे दो.....

हे प्रभू वरदान दे दो, दो दया का दान दे दो,
प्रार्थना के इन सुरों में एक सुर मेरा भी होवे ।

एक तुम सबके हो दाता,
एक तुम ही तो विधाता ।
है तुम्हीं से सृष्टि सारी,
एक तुम ही तो हो त्राता ।
हे प्रभु वरदान दे दो, दो दया का दान दे दो,
वंदना के इन सुरों में एक सुर मेरा भी होवे ।

चाहे दुःख के शूल छीलें,
चाहे सुख के झूले झूलें ।
हो कोई कैसा समय भी,
हम कभी तुझको न भूलें ।
हे प्रभू वरदान दे दो, दो दया का दान दे दो,
भावना के इन सुरों में एक सुर मेरा भी होवे ।

कैसी भी बाधाएँ आएँ,
कैसी भी विपदाएँ आएँ ।
हम कभी ना राह भूलें,
सत्य पथ बढ़ते ही जाएँ ।
हे प्रभू वरदान दे दो, दो दया का दान दे दो,
याचना के इन सुरों में एक सुर मेरा भी होवे ।

(09.09.2013)
सिडनी

74. भूल यदि कोई क्षमा हो.....

भूल यदि कोई क्षमा हो, अब विदा की मेरी बेला,
मेरे लिए शुभकामना हो, अब विदा की मेरी बेला ।

विधि ही जाने जो हमें इस तरह आपस मिलाती,
फिर हमें यूँ दूर करती हमको जीवन भर रुलाती ।
कौन जाने विधि हमें शायद मिला दे फिर कभी यूँ,
यह ही केवल भावना हो, अब विदा की मेरी बेला,
मेरे लिए शुभकामना हो, अब विदा की मेरी बेला ।

हो मिलन संभव नहीं तो हो सके मुझे भूल जाना,
वेदना से हो व्यथित मत व्यर्थ में आँसू बहाना ।
हम सभी को ज़िंदगी के ऋण बचे वह तो चुकाने,
रुद्ध स्वर से याचना हो, अब विदा की मेरी बेला,
मेरे लिए शुभकामना हो, अब विदा की मेरी बेला ।

साथ मुझको जो मिला अज्ञात का आभार मानूँ,
कह दिया जो भी कहा तेरा दिया अधिकार जानूँ ।
वेदना कहती मेरी अंतिम समय है कह चलूँ कुछ,
ईश से बस प्रार्थना हो, अब विदा की मेरी बेला,
मेरे लिए शुभकामना हो, अब विदा की मेरी बेला ।

(10.09.2013)
सिडनी

75. हे प्रभू तेरी वंदना में.....

हे प्रभू तेरी वंदना में मैं निरत ही गीत गाऊँ,
मैं निरत ही हाथ जोड़ूँ शीश चरणों में नवाऊँ ।

मेरे अंतर तम में आकर तुम ही तो भरते उजाला,
हो के विस्मित देख पाता सृष्टि का यह खेल सारा,
हे प्रभू तेरी कृपा से मैं निरत ही गुनगुनाऊँ,
मैं निरत ही हाथ जोड़ूँ शीश चरणों में नवाऊँ ।

तुम ही नीरव मन में मेरे सुन मधुर झंकार भरते,
कल्पना के पंख भरकर स्वप्न का संसार रचते,
हे प्रभू तेरी कृपा से मैं निरत ही मुस्कराऊँ,
मैं निरत ही हाथ जोड़ूँ शीश चरणों में नवाऊँ ।

तुम ही मन के मरु सजाते नेह की बूँदों की झरझर,
तब ही तो गाता तुम्हें मैं ले अमित उल्लास अविकल,
हे प्रभू तेरी कृपा से मैं निरत ही सुर सजाऊँ,
मैं निरत ही हाथ जोड़ूँ शीश चरणों में नवाऊँ ।

(10.09.2013)
सिडनी

76. देश तेरी याद में में कौन.....

देश तेरी याद में में कौन सा एक गीत गाऊँ,
कर रहूँ स्तुति तेरी मैं या व्यथा तेरी सुनाऊँ ।

गर्व करते हैं हिमालय देश का मस्तक हमारा,
पर पड़ोसी ने ये मस्तक है कभी का छाँट डाला ।
एक दबी हुंकार भरते जानते पर सत्य यह है,
छीनना आसां नहीं है दैत्य के मुहँ से निवाला ।

शक्ति से कैसे भरूँ मैं कैसे मैं साहस बढ़ाऊँ,
कर रहूँ स्तुति तेरी मैं या व्यथा तेरी सुनाऊँ ।

यह सदा से है भरोसा ले सुधा बहते हैं नद्जल,
साफ़ पानी की सदा ही बह रहीं धारा ही अविरल ।
पर शहर तेरे ही कितने भर रहे प्रतिदिन प्रदूषण,
जिन नदी को माँ बुलाते नाम लेते भक्ति से भर ।

कह रहूँ मैं ही बता दे मैं तुझे ही कुछ सुझाऊँ,
कर रहूँ स्तुति तेरी मैं या व्यथा तेरी सुनाऊँ ।

वृक्ष जिनको मित्र कहते पूजते करते नमन सब,
हरीतिमा फैली यहाँ पर है धरा की श्वास हरपल ।
स्वार्थ में सब कट रहे हैं जाने अनजाने में कितने,
जो सदा संसक्त हमसे जानते हम प्राण संबल ।

देख हूँ दुःख से भरा मैं रोष भी किससे जताऊँ,
कर रहूँ स्तुति तेरी मैं या व्यथा तेरी सुनाऊँ ।

जब कोई अफ़वाह फैले बात उठ जाए जरा सी,
भर उठें प्रतिशोध से मन आग लग जाए बला की ।
कत्ल ये धूँ धूँ मकां फिर धर्म की जय हो पुकारें,
हैं सभी वहशी दरिंदे फिर कहाँ कोई देशवासी ।
हो रहूँ लज्जित स्वयं ही शर्म से मैं सिर झुकाऊँ,
कर रहूँ स्तुति तेरी मैं या व्यथा तेरी सुनाऊँ ।

कितने ही कृशकाय तन हैं पेट पीठ से जा सटा है,
कौन जाने आज़ भोजन भाग्य में कितना बदा है ।
अंधी प्रगति की दौड़ में सब दौड़ते हैं अंधे होकर,
अब किसी भी आदमी को और को फुर्सत कहाँ है ।
देखता चुपचाप यह सब मौन में आँसू बहाऊँ,
कर रहूँ स्तुति तेरी मैं या व्यथा तेरी सुनाऊँ ।

कौन सी सत्ता है जन की हैं सभी तो सत्ताधारी,
हो रहा खुलकर तमाशा देखती चुप जनता सारी ।
कहने को जनतंत्र अपना पर दबंगी राज चलता,
क्रूर हँसी भर सीना ताने घूमते अब बलात्कारी ।
क्या कहूँ कैसा लगे अब किसको ये पीड़ा बताऊँ,
कर रहूँ स्तुति तेरी मैं या व्यथा तेरी सुनाऊँ ।

(12.09.2013)
सिडनी

77. एक नया राग एक नया.....

एक नया राग एक नया रंग,
मन में भर ले फिर से उमंग ।

ऋतु ले फिर से अँगड़ाई सी,
चल दे फिर से पुरवाई सी ।
फिर से कोयल सी एक कूके,
आ जाए फिर से नव बसंत ।

एक नया राग एक नया रंग,
मन में भर ले फिर से उमंग ।

मन में फिर से उल्लास भरे,
मन में फिर से विश्वास भरे ।
मनकलिका फिर से खिल ले,
खिल जाएं फिर से बहिर अंग ।

एक नया राग एक नया रंग,
मन में भर ले फिर से उमंग ।

फिर से मन में अरमान उठे,
फिर से मन में तूफ़ान उठे ।
बज जाएँ फिर से साज़ मधुर,
बज़ जाए कोई जलतरंग ।

एक नया राग एक नया रंग,
मन में भर ले फिर से उमंग ।

(13.09.2013)
सिडनी

78. आओ गहें हाथों में हाथ.....

आओ गहें हाथ में हाथ,
साथ साथ हो चुपचाप ।

आओ बहें पलों के साथ,
साथ साथ हो चुपचाप ।

आओ सुनें फूलों की बात,
साथ साथ हो चुपचाप ।

आओ हसें आँखों में आँख,
साथ साथ हो चुपचाप ।

आओ खिलें हों जलजात,
साथ साथ हो चुपचाप ।

(13.09.2013)
सिडनी

79. तेरी मेरी राह की एक ही तो है.....

तेरी मेरी राह की एक ही तो है दिशा,
या तो मेरे साथ चल या तेरे चलूँ बता ।
एक ही तो है सफ़र है ज़रा सा फ़ासला,
या तो मेरे साथ चल या तेरे चलूँ बता ।

साथ साथ जो चले जब भी चाहे देख लूँ,
हाथ तेरा हाथ ले जब भी चाहे झूम लूँ ।
मुस्करा के यूँ न रह ओठ ना हँसी दबा,
या तो मेरे साथ चल या तेरे चलूँ बता ।

हो कभी भी मौज़ में कोई गुनगुनाए तो,
सुर सजा के जो कभी कोई गीत गाए तो ।
मैं भी तेरी सुन सकूँ तू सूने मेरी सदा,
या तो मेरे साथ चल या तेरे चलूँ बता ।

सोचता हूँ बार बार कुछ तो सोच तू रहे,
बोलता हूँ बार बार कुछ तो बोल तू रहे ।
देख हो न चुप यूँ ही एक ले तो फ़ैसला,
या तो मेरे साथ चल या तेरे चलूँ बता ।

(15.09.2013)

सिडनी

80. कोई पल आँसू बहाता.....

कोई पल आँसू बहाता,
कोई पल आ मुस्कराता ।

कोई पल रच दे कहानी,
कोई पल कह दे पुरानी ।
कोई पल चुपचाप जैसे,
कोई पल सुनता सा जाता ।

कोई पल आँसू बहाता,
कोई पल आ मुस्कराता ।

कोई पल चिंता से आकुल,
कोई पल पीड़ा से व्याकुल ।
कोई पल उन्माद होता,
कोई पल घबरा सा जाता ।

कोई पल आँसू बहाता,
कोई पल आ मुस्कराता ।

कोई पल सुंदर सपन सा,
कोई पल मीठी चुभन सा ।
कोई पल हो दौड़ता सा,
कोई पल कभी रुक सा जाता ।

कोई पल आँसू बहाता,
कोई पल आ मुस्कराता ।

(16.09.2013)

सिडनी

81. हे प्रभू मैं तो सदा ही.....

हे प्रभू मैं तो सदा ही तेरा ही गुणगान गाऊँ,
एक तेरी ही कृपा का मैं सदा वरदान पाऊँ ।

इस जगत में है ना कोई,
एक तुम ही तो सहारे ।
तुम ही तो हो मेरी नैया,
एक तुम ही खेवनहारे ।
हे प्रभू तुम ही किनारा मैं दिशा तेरी ही आऊँ,
हे प्रभू मैं तो सदा ही तेरा ही गुणगान गाऊँ ।

होने को हैं साथ सब ही,
जानता हूँ पर अकेला ।
देखता हूँ टीस से मैं,
तेरी दुनियाँ का ये मेला ।
हे दयावर दृष्टि दे दो मैं भी पीड़ा को घटाऊँ,
हे प्रभू मैं तो सदा ही तेरा ही गुणगान गाऊँ ।

है तुम्हीं से सृष्टि सारी,
हो तुम्हीं इसके विधाता ।
हैं तुम्हारे अंश सब ही,
हो तुम्हीं तो सबके त्राता ।
हे प्रभू तारो मुझे भी श्रृद्धा से मैं सर नवाऊँ,
हे प्रभू मैं तो सदा ही तेरा ही गुणगान गाऊँ ।

(16.09.2013)

सिडनी

82. फैलेगा उजियारा फिर से.....

फैलेगा उजियारा फिर से, मन में भर लो आस यही,
जाएगा अँधियारा फिर से, मन भर लो विश्वास यही ।

सूरज की पड़ती किरणों से घना अँधेरा जाएगा,
रात हो चाहे कितनी लंबी सुखद सवेरा आएगा,
होगा सूरज प्यारा फिर से, मन भर लो एहसास यही,
जाएगा अँधियारा फिर से, मन भर लो विश्वास यही ।

कलियाँ फिर से हँस जाएँगी फूल सभी मुस्काएँगे,
पंछी फिर से कलरव सुर भर भँवरे गुनगुन गाएँगे,
जीतेगा मन हारा फिर से, मन भर लो अभिलाष यही,
जाएगा अँधियारा फिर से, मन भर लो विश्वास यही ।

फिर से सुंदर स्वप्न जगेंगे नया राग सज जाएगा,
मन में एक हिल्लोल उठेगी मधुर गीत रच जाएगा,
बाजेगा इकतारा फिर से, मन भर लो एक बात यही,
जाएगा अँधियारा फिर से, मन भर लो विश्वास यही ।

(17.09.2013)
सिडनी

83. ओठों पर मुस्कान चेहरे.....

ओठों पर मुस्कान चेहरे पर हँसी है,
जब से तेरी छवि मेरे मन में बसी है ।

है नहीं मन मेरे अब गहरा अँधेरा,
यूँ लगे जैसे कि हो स्वर्णिम सवेरा ।
छा रही है लालिमा मन नभ पे मेरे,
उड़ रहा है मन गगन हंसों का जोड़ा ।
अब तो मेरे मन सदा ही रौशनी है,
जब से तेरी छवि मेरे मन में बसी है ।

मैं भी फूलों की तरह महका हूँ जैसे,
मैं भी पंछी की तरह चहका हूँ जैसे ।
ऐसा लगता है बिना ही भार के मैं,
मैं भी मस्ती में सदा बहका हूँ जैसे ।
यूँ लगे जन्नत कि जैसे मिल गई है,
जब से तेरी छवि मेरे मन में बसी है ।

हैं रंगीले अब तो सारे स्वप्न मेरे,
यह लगे चारों तरफ खुशियाँ हों घेरे ।
इन्द्रधनुषीय चाप पर बैठा तुझे ले,
मैं लगाता तेरे संग में नित्य फेरे ।
यूँ लगे मुझको न अब कोई कमी है,
जब से तेरी छवि मेरे मन में बसी है ।

(17.09.2013)
सिडनी

84. बात ग़र यूँ बनी नहीं होती.....

बात ग़र यूँ बनी नहीं होती,
इस तरह यूँ ख़ुशी नहीं होती ।

वो दबे पाँव भला क्यूँ आते,
दिल में ग़र आरज़ू नहीं होती ।

कोई होता जरा सा सहमा तो,
बात लब पर ये यूँ नहीं होती ।

होश खोते ज़रा सा लगता ये,
फिर भी ये बेख़ुदी नहीं होती ।

गुल तो होते यूँ ही गुलशन में,
इनमें यह ताजगी नहीं होती ।

दिल तो होता यूँ ही कहने को,
ये मगर आग फिर नहीं होती ।

न ये मिलता कि जो भी पाया है,
ये जुस्तज़ू भी कुछ नहीं होती ।

साथ उनका है तो हंसी यह है,
वरना ये ज़िंदगी नहीं होती ।

(17.09.2013)
सिडनी

85. किसी छूटे का कभी साथ.....

किसी छूटे का कभी साथ निभा कर दिखो,
किसी रूठे को कभी प्यार में आकर देखो ।
तब तेरी यूँ ही नहीं शान से कट जाएगी,
ज़िंदगी क्या है तभी ये भी समझ आएगी ।

हैं न कितने ही सदा देखते हैं आस भरे,
जो उन्हें दे दे सहारा ज़रा सा साथ चले ।
ज़रा सा बढ़ के दिखा दे किधर को जाना है,
कोई उम्मीद ज़रा सी ज़रा सा पास फले ।

किन्हीं हाथों से ज़रा हाथ मिला कर देखो,
किसी के साथ ज़रा पग को बढ़ा कर देखो ।
तुझे दुनियाँ ही तेरी बदली नज़र आएगी,
ज़िंदगी क्या है तभी ये भी समझ आएगी ।

सूने से मन हैं कितने सूनी सी निगाहें हैं,
अधर हैं शुष्क सदा सर्द भरी आहें हैं ।
ऐसा लगता है जैसे ढो रहे हैं जीवन को,
टूटे से सुर हैं सदा उखड़ी सी सदाएँ हैं ।

किसी आवाज़ में आवाज़ मिला कर देखो,
किसी के सुर को कभी साथ में गाकर देखो ।
कोई सी सुर की लहर जादू सा कर जाएगी,
ज़िंदगी क्या है तभी ये भी समझ आएगी ।

कैसा जीवन जो सदा अपने लिए जीता हो,
ख़ुद ही खाता हो सदा अपने लिए सीता हो ।
है नहीं दर्द ज़िगर में जरा भी दूजे का,
औरों पे हँसता सदा ख़ुद के लिए रोता हो ।

किसी बेबस का कभी नीर सुखा कर देखो,
हो रहे दर्द को जा तुम भी बँटा कर देखो ।
फिर अंधेरे में नयी रोशनी भर जाएगी,
ज़िंदगी क्या है तभी ये भी समझ आएगी ।

(18.09.2013)
सिडनी

86. तू ही सदा दिल में मेरे.....

तू ही सदा दिल में मेरे तू ही तो मेरे साथ है,
भूला नहीं पल भर तुझे ओ देश तेरी याद है ।

भर लूँ कोई खुशबू अगर मन में तेरा ही फूल है,
धर लूँ कहीं भी पग मगर मन में तेरी ही धूल है,
तू है कभी भी दूर ना हरदम ही मेरे पास है,
भूला नहीं पल भर तुझे ओ देश तेरी याद है ।

मैं चाहूँ जब विस्तार को ले तेरा ही आसमान है,
जब चाह लूँ आह्लाद मैं मुझे तेरा ही तो ज़हान है,
तू ही तो जन्नत है मेरी एक तुझी पर नाज़ है,
भूला नहीं पल भर तुझे ओ देश तेरी याद है ।

कहने को धरती पर यहाँ होने को कितने देश हैं,
सब ही अनूठे अपने में अपने में सारे विशेष हैं,
वह किसी में है कहाँ जो ख़ास तुझमें बात है,
भूला नहीं पल भर तुझे ओ देश तेरी याद है ।

(19.09.2013)
सिडनी

87. ढम ढम ढम ढम ढोल बजे.....

ढम ढम ढम ढम ढोल बजे बजने लगी शहनाई,
ये धक धक जिया करे घड़ी मिलन की आई ।

तुझको ही सजता है बालों का ये बदरा,
तुझको ही महका है फूलों का ये गजरा,
खन खन खन खन चूड़ी बजे मेरी सजी कलाई,
ये धक धक जिया करे घड़ी मिलन की आई ।

तेरे ही कारण तो आँखों में है काज़ल,
तेरे ही कारण तो सतरंगी है आँचल,
झुम झुम झुम झुम झुमका भी कानों पड़े सुनाई,
ये धक धक जिया करे घड़ी मिलन की आई ।

आँखों में आ धर लूँ पिया आ रे आ जा,
बाँहों में आ भर लूँ पिया आ रे आ जा,
छम छम छम छम पायलिया परों ताल मिलाई,
ये धक धक जिया करे घड़ी मिलन की आई ।

(20.09.2013)
सिडनी

88. है हसीन दिन मेरा.....

है हसीन दिन मेरा, है हसीन मेरी रात,
है हसीन तुमसे शाम, है हसीं मेरा प्रभात,
कहो कहूँ मैं बार-बार, है मुझे तुम्हीं से प्यार,
कहो कहूँ मैं बार-बार, है मुझे तुम्हीं से प्यार ।

है उदास सारा दिन, है उदास भी ये रात,
शाम बिन तेरे उदास, है उदास यह प्रभात,
कहो कहूँ मैं बार-बार, हूँ तुम्हीं को बेक़रार,
कहो कहूँ मैं बार-बार, है मुझे तुम्हीं से प्यार ।

मैं तकूँ हर एक दिन, राह देखूँ सारी रात,
मैं तकूँ हर एक शाम, राह देखूँ मैं प्रभात,
कहो कहूँ मैं बार बार, इक तुम्हारा इंतज़ार,
कहो कहूँ मैं बार-बार, है मुझे तुम्हीं से प्यार ।

आ कहो तो दिन कहूँ, आ कहो तो है ये रात,
आ कहो तो मैं ये शाम, आ कहो तो मैं प्रभात,
कहो कहूँ मैं बार बार, एक तुम्हीं पे एतबार,
कहो कहूँ मैं बार-बार, है मुझे तुम्हीं से प्यार ।

(20.09.2013)
सिडनी

89. अभी अभी तो दिन छिपा.....

अभी अभी तो दिन छिपा, अभी हुई ही रात है,
अभी तो देर तक निशा, दूर यह प्रभात है,
हुआ घना ये तम प्रबल,
जल निशा के दीप जल ।

न नभ में फैली चाँदनी, न नभ में चाँद आज़ है,
अभी तो देर तक निशा, दूर यह प्रभात है,
हुआ घना ये तम प्रबल,
जल निशा के दीप जल ।

हैं विहग भी मौन अब, न अब कोई आवाज़ है,
अभी तो देर तक निशा, दूर यह प्रभात है,
हुआ घना ये तम प्रबल,
जल निशा के दीप जल ।

अब तो तेरी ही किरण, न और कोई साथ है,
अभी तो देर तक निशा, दूर यह प्रभात है,
हुआ घना ये तम प्रबल,
जल निशा के दीप जल ।

(21.09.2013)
सिडनी

90. ये शाम गुनगुना रही सुबह.....

ये शाम गुनगुना रही सुबह भी गीत गाए है,
तुम इधर ही आ रहे हवा भी ये सुनाए है ।

अब तो फूल खिल रहे एक तेरी आस से,
पंछी भी चहक रहे हैं शाख से प्रशाख से,
भँवरा तेरे नाम को सुर में गुनगुनाए है,
तुम इधर ही आ रहे हवा भी ये सुनाए है ।

नभ में आ घटा उठी छा रही छाया बन,
गा रहा पपीहरा नृत्य करते मोर वन,
आस में तेरी तो अब पथ भी मुस्कराए है,
तुम इधर ही आ रहे हवा भी ये सुनाए है ।

मेरे मन में राग की सुर में बजती बाँसुरी,
मन के द्वार सज रहे सज रही गली गली,
इस ख़ुशी से मेरा मन झूम झूम जाए है,
तुम इधर ही आ रहे हवा भी ये सुनाए है ।

(21.09.2013)
सिडनी

91. एक मैं और एक तू.....

एक मैं और एक तू और ये बयार है,
एक मैं और एक तू और ये ख़ुमार है ।
हम भी मिल के साथ साथ आज़ थोड़ा घूम लें,
हाथ तेरा ले के हाथ हम भी साथ झूम लें ।

सुन रहें नदी का नाद किस तरह सुना रही,
बहती बहती तेज तेज पी से मिलने जा रही ।
एक मैं अैर एक तू और ये आवाज़ है,
एक मैं और एक तू और ये ख़ुमार है ।
हम भी मिल के साथ साथ आज़ थोड़ा घूम लें,
हाथ तेरा ले के हाथ हम भी साथ झूम लें ।

आ गगन में उड़ चलें हम भी पंछियों के साथ,
दूर जाके दे रहें हम भी इस घटा का साथ ।
एक मैं और एक तू और ये क़रार है,
एक मैं और एक तू और ये ख़ुमार है ।
हम भी मिल के साथ साथ आज़ थोड़ा घूम लें,
हाथ तेरा ले के हाथ हम भी साथ झूम लें ।

हम भी आज़ धर रहें उड़ती तितलियों के पंख,
हर एक फूल चूम लें स्वाद भर लें मकरंद ।
एक मैं और एक तू और ये बहार है,
एक मैं और एक तू और ये ख़ुमार है ।
हम भी मिल के साथ साथ आज़ थोड़ा घूम लें,
हाथ तेरा ले के हाथ हम भी साथ झूम लें ।

या कि जा के छिप रहें उस जगह न हो कोई,
हमको सब दिखाई दे हमको देखे न कोई ।
एक मैं और एक तू और ना पुकार है,
एक मैं और एक तू और ये ख़ुमार है ।
हम भी मिल के साथ साथ आज़ थोड़ा घूम लें,
हाथ तेरा ले के हाथ हम भी साथ झूम लें ।

(22.09.2013)

सिडनी

92. क्या करोगे रोक कर इनको.....

क्या करोगे रोक कर इनको भी तुम, अश्रु बहते है तो बहने दो इन्हें,
जो कथा कब से कभी भी मौन है, वह कथा कहते है कहने दो इन्हें ।

कौन सा मन में दबा उल्लास है,
कौन सा कैसा दबा संताप है ।
कह रहेंगे अश्रु अपने आप ही,
कौन सा मन पर धरा अतिभार है ।
सह रहे जो भी जलन दोनों नयन, जो भी सहते हैं वो सहने दो इन्हें,
जो कथा कब से कभी भी मौन है, वह कथा कहते है कहने दो इन्हें ।

कुछ अधूरे से बने थे वे जो घर,
चल दिए फिर छोड़कर आगे डगर ।
देखते हैं पीछे भर कर टीस से,
किस तरह दिखते हैं केसे खण्डहर ।
ढह रहे हैं और जो स्मृति शिविर, ढह रहे हैं जो भी ढहने दो उन्हें,
जो कथा कब से कभी भी मौन है, वह कथा कहते है कहने दो इन्हें ।

धन्य है स्मृति सजी है भाल पर,
है कथा कोई समय की ताल पर ।
आ चमकने दो यही ये अश्रुकण,
झरने दो ऐसे ही इनको गाल पर ।
पौंछना मत इनको तुम अब हाथ से, जो भी रहते है ये रहने दो इन्हें,
जो कथा कब से कभी भी मौन है, वह कथा कहते है कहने दो इन्हें ।

(22.09.2013)

सिडनी

93. प्रात है प्रभु प्रार्थना यह.....

प्रात है प्रभु प्रार्थना यह दो हमें भी शक्ति बल दो,
धैर्य दे दो ध्यान दे दो गर्व और गरिमा सकल दो ।

प्रात की वेला मधुर हो दृष्टिगोचर हों दिशाएँ,
हों सुमन सौरभ सजातीं मंद शीतल भी हवाएँ,
हे प्रभू सत्कर्म हों सब तुम सदा हमको सुफल दो,
धैर्य दे दो ध्यान दे दो गर्व और गरिमा सकल दो ।

राह भीगी ओस से हो और हों कोकिल की तानें,
धीरे–धीरे खिल रहे हों बंद कलियों के मुहाने,
हो सदा सन्मार्ग अपना मेधा ये अपनी अचल दो,
धैर्य दे दो ध्यान दे दो गर्व और गरिमा सकल दो ।

हम चलें निर्भीक होकर कोई बाधा भी न आए,
मन सदा उल्लासमय हो तेज से मुख जगमगाए,
ओज से हम तो भरे हों तन हमें पुलकित चपल दो,
धैर्य दे दो ध्यान दे दो गर्व और गरिमा सकल दो ।

(23.09.2013)
सिडनी

94. हे रे नटवर हे रे नागर.....

हे रे नटवर हे रे नागर हे रे मोहन हे मुरारी,
हो रही है रात्रि हे रे प्रार्थना सुन लो हमारी ।

है न अब तो आस कोई अब तो आकर दुःख ने घेरा,
अब तो केवल यह निशा है न अपना कब सवेरा,
दो हमें भी आस हे रे माँगते हम हो भिखारी,
हो रही है रात्रि हे रे प्रार्थना सुन लो हमारी ।

आज़ मन नभ भी ये सूना है न तारा टिमटिमाता,
है न नभ पर चंद्रमा ही ज्योत्स्ना अपनी खिलाता,
दो हमे भी दृष्टि हे रे रौशनी माँगें तुम्हारी,
हो रही है रात्रि हे रे प्रार्थना सुन लो हमारी ।

इस जगत में तुम ही अपने और न कोई है हमारा,
तुमने तो जाने ना कितने दीन दुखियों को ही तारा,
दो दया का दान हे रे हो कृपा बाँके बिहारी,
हो रही है रात्रि हे रे प्रार्थना सुन लो हमारी ।

(24.09.2013)
सिडनी

95. सो लिए जितना था सोना.....

सो लिए जितना था सोना, आज़ फिर से जग पड़ो तुम,
उठ रहो अँगड़ाई लो और, आज़ फिर से चल पड़ो तुम ।

जा चुका कब का धरा से, गत निशा का घन अँधेरा,
छा गयीं फिर सूर्य किरणें, भोर आया फिर सुनहरा,
फिर भरो स्फूर्ति अपनी, आज़ फिर से सज़ पड़ो तुम,
उठ रहो अँगड़ाई लो और, आज़ फिर से चल पड़ो तुम ।

है समय सीमित हमारा, व्यर्थ इसको मत निकालो,
जो भी तुमको लक्ष्य पाना, वह समय सीमा में पा लो,
त्याग दो तंद्रा को अपनी, आज़ फिर से खिल पड़ो तुम,
उठ रहो अँगड़ाई लो और, आज़ फिर से चल पड़ो तुम ।

आज़ ही अपना कहो तुम, कल को किसने कब है देखा,
एक क्षण भी भूलना मत, श्रम ही इस जीवन का लेखा,
मन भरो उल्लास अपने, आज़ फिर से हँस पड़ो तुम,
उठ रहो अँगड़ाई लो और, आज़ फिर से चल पड़ो तुम ।

(25.09.2013)
सिडनी

96. यहाँ कोई नहीं मेरा अपना.....

यहाँ कोई नहीं मेरा अपना कैसे कह दें,
यह जीवन है कोरा सपना कैसे कह दें ।
ये रोज़ सवेरे खिले सुमन,
ये हरे सजीले वन उपवन ।
ये सुरभि सजाती मंद हवा,
ये नभ से आतीं स्वर्ण किरण ।
यह व्यर्थ धरा का यूँ सजना कैसे कह दें,
यह जीवन है कोरा सपना कैसे कह दें ।
ये भँवरों का होता गुंजन,
ये चिड़ियों से होती चहकन ।
ये नदिया की होती कलकल,
ये सागर से होता गर्जन ।
बिन अर्थ है बदली का भरना कैसे कह दें,
यह जीवन है कोरा सपना कैसे कह दें ।
ये शांत सरोवर तेरे नयन,
ये पायल चूड़ी की झन खन ।
ये पुलकित सी तेरी श्वासें,
ये दिल की होती हर धड़कन ।
निरअर्थ है यह तेरा हँसना कैसे कह दें,
यह जीवन है कोरा सपना कैसे कह दें ।
ये सूर्य चंद्रमा तारागण,
ये सृष्टि सजाती परिवर्तन ।
ये सब ही हैं अनुस्यूत कहीं,
ये पल पल होता होनापन ।
बस यूँ ही यह उसकी रचना कैसे कह दें,
यह जीवन है कोरा सपना कैसे कह दें ।

(25.09.2013)

सिडनी

97. निर्भय होकर आगे बढ़.....

निर्भय होकर आगे बढ़ रे, क्यों रे तू इतना डरता है,
जो भी होगा शुभ ही होगा, क्यों रे तू संशय करता है ।

सूरज भी निष्प्रभ सा जैसे शाम कहीं पर खो जाता है,
वही सवेरे फिर से आकर अपनी किरणों बिखराता है,
है ये मंजिल जानो उसकी अपनी धुन में जो भरता है,
जो भी होगा शुभ ही होगा, क्यों रे तू संशय करता है ।

काले बादल जब छा जाते छिपते सूरज चाँद सितारे,
थोड़े समय को धुँधले होते अपनी जमीं से सारे नजारे,
संशय करने वाला प्राणी, पल जीता पल में मरता है,
जो भी होगा शुभ ही होगा, क्यों रे तू संशय करता है ।

जब जब तूने दीप जलाया पथ का अँधेरा दूर हुआ है,
फिर से तुझमें साहस आया पथ भी थोड़ा पास हुआ है,
क्यों करता है आकुल अंतर, क्यों रे तू आँसू झरता है,
जो भी होगा शुभ ही होगा, क्यों रे तू संशय करता है ।

(26.09.2013)
सिडनी

98. पुकारो पुकारो मुझे.....

पुकारो पुकारो मुझे फिर पुकारो,
मेरा नाम लेकर मुझे फिर पुकारो ।
मन के सरोवर कमल खिल रहे हैं,
मन के बुझे दीप फिर जल रहे हैं ।

बजती कहीं पर कोई बाँसुरी सी,
कूहकी कहीं पर है कोकिला सी ।
होने लगी है भँवरों की गुनगुन,
चहकी कहीं पर कोई शुकी सी ।

पुकारो पुकारो मुझे फिर पुकारो,
मेरा नाम लेकर मुझे फिर पुकारो ।
मन की तरंगों में सुर सज रहे हैं,
मन के बुझे दीप फिर जल रहे हैं ।

होने लगी है नदिया में कलकल,
उच्छल तरंगें लेता है सागर ।
बहने लगी है हवा फिर सुहानी,
सजने लगा है धरती का आँचल ।

पुकारो पुकारो मुझे फिर पुकारो,
मेरा नाम लेकर मुझे फिर पुकारो ।
मन में सोए गीत फिर जग रहे हैं,
मन के बुझे दीप फिर जल रहे हैं ।

लेते हो तुम नाम जब भी हमारा,
मिलता सदा ही हमें एक सहारा ।
विथकित को जैसे पेड़ों की छाँव,
प्यासे को जैसे जल की हो धारा ।

पुकारो पुकारो मुझे फिर पुकारो,
मेरा नाम लेकर मुझे फिर पुकारो ।
मन के गगन में विहग उड़ रहें हैं,
मन के बुझे दीप फिर जल रहे हैं ।

(27.09.2013)
सिडनी

99. ओ देश तेरी जय हो जय हो.....

ओ देश तेरी जय हो जय हो, जयकार उठे जयकार उठे,
हर ओर यही आवाज़ यही, हर बार उठे हर बार उठे ।

तेरे कितने ही क्षितिधर हैं,
कंदर हैं तुझमें कितने ही ।
तेरे कितने ही सरवर हैं,
जलधर हैं तुझमें कितने ही ।
हैं सुरभि सजाते वन उपवन महकार उठे महकार उठे,
ओ देश तेरी जय हो जय हो, जयकार उठे जयकार उठे ।

वापी में होती हलचल है,
कलकल होती है नदिया में ।
बादल में होती गड़गड़ है,
झरझर होती है वर्षा में ।
नित नीर गिराते निर्झर की झंकार उठे झंकार उठे,
ओ देश तेरी जय हो जय हो, जयकार उठे जयकार उठे ।

वृक्ष कहीं मरमर करते,
फड़फड़ करते हैं विहग कहीं ।
आरण्य कहीं चरचर करते,
हरहर करते हैं मनुज कहीं ।
हो जाता हर एक सम्मोहित मल्हार उठे मल्हार उठे,
ओ देश तेरी जय हो जय हो, जयकार उठे जयकार उठे ।

(29.09.2013)
सिडनी

100. ज़रा अपने सर से ये आँचल.....

ज़रा अपने सर से ये आँचल हटाओ ला देख लूँ मैं ये ज़ुल्फें तुम्हारी,
ये पलकें झुका कर न यूँ मुस्कराओ ला देख लूँ मैं ये ज़ुल्फें तुम्हारी ।

जब से मिले हो मुझसे तुम आकर लगता है सारी ख़ुशी मिल गई है,
मुझे मिल गयी है मेरी भी मंज़िल मन की मेरी भी कली खिल गई है,
ज़रा सा तो बढ़कर नज़दीक आओ ला देख लूँ मैं ये ज़ुल्फें तुम्हारी,
ये पलकें झुका कर न यूँ मुस्कराओ ला देख लूँ मैं ये ज़ुल्फें तुम्हारी ।

यदि खोल दो तुम इनको जरा सा इन्हें उँगलियों ले मैं भी तो खेलूँ,
साँसों में भर लूँ मैं ख़ुशबू इन्हीं की मैं भी तो ख़ुश हो लहरा के झूमूँ,
हथेली में अपना न चेहरा छिपाओ ला देख लूँ मैं ये ज़ुल्फें तुम्हारी,
ये पलकें झुका कर न यूँ मुस्कराओ ला देख लूँ मैं ये ज़ुल्फें तुम्हारी ।

बिखरा दो इनको आ माथे पे मेरे हो जाऊँ बेसुध सा आँखों को मीचे,
इनके तले ही तो सुख की है छाया जन्नत कोई है तो इनके ही नीचे,
न मेरी अरज़ को हँसी में उड़ाओ ला देख लूँ मैं ये ज़ुल्फें तुम्हारी,
ये पलकें झुका कर न यूँ मुस्कराओ ला देख लूँ मैं ये ज़ुल्फें तुम्हारी ।

(30.09.2013)
सिडनी

101. इतनी जल्दी मत धीरज खो.....

इतनी जल्दी मत धीरज खो मत यूँ तू हार अभी रे मन,
थोड़ी सी और प्रतीक्षा कर मत ख़ुद को मार अभी रे मन ।
कोई तो लहर निकट आकर सुर लहरी में ढल जाएगी,
कोई तो पंक्ति भरेगी लय जो मधुर गीत बन जाएगी ।

तू अपना एकल भाव लिए शब्दों को नभ पर तिरने दे,
चुपके से पीछे जा उनके कभी उनको पीछे फिरने दे ।
होंगे नव अर्थ उजागर तब इक नव उमंग भर जाएगी,
कोई तो पंक्ति भरेगी लय जो मधुर गीत बन जाएगी ।

जब क्रम में शब्द जुड़ेंगे आ इक अभिनव रूप सजाएँगे,
फिर आकर उस ही अनुक्रम में बढ़ते ही बढ़ते जाएँगे ।
तब फिर से घन नीरवता में इक कोयल कूहकूह गाएगी,
कोई तो पंक्ति भरेगी लय जो मधुर गीत बन जाएगी ।

तू तन्मय होकर जब उनको सुर में भरकर गाएगा,
फिर फिर कर उन शब्दों को ले लय में जब दोहराएगा ।
तब तेरे ही तो नभ पर आ इक सूर्य किरण मुस्काएगी,
कोई तो पंक्ति भरेगी लय जो मधुर गीत बन जाएगी ।

(01.10.2013)
सिडनी

102. देखता यदि एकटक.....

देखता यदि एकटक मैं बस तुम्हें ही देखता हूँ,
सोचता हूँ यदि निरंतर बस तुम्हें ही सोचता हूँ ।
एक तुम ही हो कि जिसको माँगता हूँ रात दिन मैं,
चाहता हूँ यदि किसी को बस तुम्हें ही चाहता हूँ ।
मेरे मन मूरत सजी है एक बस केवल तुम्हारी,
मेरे अन्तस् में बसी है कामना केवल तुम्हारी ।

तुमको आता देख लूँ तो मैं बिछा दूँ पलक अपनी,
अश्रु आँखों में तिरें और भीगतीं आ कोर अपनी ।
तेरे बालों को मैं छू लूँ काँपती इस उंगलियों से मैं,
पास यदि मेरे हो तुम तो बाँध लूँ बाँहों में अपनी ।
मेरे अधरों पर हँसी है चाहना केवल तुम्हारी,
मेरे अन्तस् में बसी है कामना केवल तुम्हारी ।

जब सुनूँ मैं स्वर तुम्हारा प्राण हो जाते प्रहर्षित,
मैं खिलूँ जैसे सुमन सा तन भी हो जाता है कंपित ।
देख लूँ जब भी तुम्हारा उड़ रहा लहराता आँचल,
सोचता यह ही सदा मैं और क्या मुझे सारगर्भित ।
मेरे भावों में भरी है भावना केवल तुम्हारी,
मेरे अन्तस् में बसी है कामना केवल तुम्हारी ।

धन्य है वह देवता जिसने मनुज हमको बनाया,
दे दिए फिर शब्द अपनी बात कहना आ सिखाया ।
भाग्य है मैं हूँ ओ तुम हो एक सी समआयु लेकर,
धन्य है वह काल जिसने इस तरह हमको मिलाया ।
मेरे श्वासों में बसी है याचना केवल तुम्हारी,
मेरे अन्तस् में बसी है कामना केवल तुम्हारी ।

(02.10.2013)

सिडनी

103. प्यास से भरे अधर आस.....

प्यास से भरे अधर आस से भरे नयन,
तेरी बाट जोहता पुकारता है मेरा मन ।

आ हवा चली गयी वह हवा जो आ रही,
कह रही है बार बार यह ही गीत गा रही,
पास तुम ही आ रहे लो अभी हुआ मिलन,
तेरी बाट जोहता पुकारता है मेरा मन ।

पात पात हिल गए वृक्ष गुल्म खिल गए,
पुष्पों से भी भँवरे आ गुनगुनाते मिल गए,
सारे व्योम भर गयीं सूर्य की हंसी किरण,
तेरी बाट जोहता पुकारता है मेरा मन ।

विहंग चहचहा रहे बोलती है अब पिकी,
झूम झूम हिल रही अब हर एक वल्लरी,
अब तो मुस्करा रहा चारों ओर यह चमन,
तेरी बाट जोहता पुकारता है मेरा मन ।

(02.10.2013)
सिडनी

104. जो भी देखे हतप्रभ सा हो.....

जो भी देखे हतप्रभ सा हो आँखों आँसू भर लाए है,
है ईश्वर की अद्भुत रचना सबसे सुन्दर कहलाए है ।

चेहरे पर सजती चन्द्रप्रभा केशों में ले घनघोर घटा,
अपनी सरवर सी आँखों में अमृत रस ले हर्षाए है ।

हैं अधर गुलाब की पंखुड़ियाँ साँसों में फूलों की खुशबू,
गालों पर सजती अरूणाई उषा का बोध कराए है ।

चुप हो तो लगे मृदु नीरवता सुर में हो तो जैसे कोयल,
मुस्कान लगे जैसे द्युति को पल पल कोई दर्शाए है ।

तन तरु की टहनी के जैसा अंगों समुचित अनुपात लिए,
जब चलती है इस धरती पर हिरणी की चाल सजाए है ।

(03.10.2013)
सिडनी

105. क्या हुआ पता नहीं किस.....

क्या हुआ पता नहीं किस तरह से रह सका
मेरे पास रुक रहो क्यों तुम्हें न कह सका ।

शब्द आ जिह्वा पे यूँ जाने कैसे रुक गए,
यूँ मुझे लगा कि जैसे ओठ मेरे सिल गए,
मैं ही जानूँ पीर ये आज़ तक जो सह सका,
मेरे पास रुक रहो क्यों तुम्हें न कह सका ।

हो के निर्निमेष सा तुमको देखता रहा,
मैं कहाँ हूँ आप में ख़ुद को खोजता रहा,
कौन सा वह रोध था उस समय न ढह सका,
मेरे पास रुक रहो क्यों तुम्हें न कह सका ।

उठ रहा था मन मेरे शुभ्र सा घना धुआँ,
तुम विदा भी हो चले मैं ही रह गया वहाँ,
अश्रु आँख तक रहा पर निकल न बह सका,
मेरे पास रुक रहो क्यों तुम्हें न कह सका ।

(03.10.2013)
सिडनी

106. कह रही है यह सुबह कह.....

कह रही है यह सुबह कह रही है यह किरण,
कह रहा है अब यही हर खिला हुआ सुमन,
तुम भी आज मेरे सा थोड़ा मुस्करा रहो,
तुम भी आज कोई सा मधुर गीत गा रहो ।

कह रही है यह दिशा कह रहा है यह पवन,
कह रहा है अब यही नभ में उड़ रहा विहंग,
तुम भी आज मेरे सा थोड़ा चहचहा रहो,
तुम भी आज कोई सा मधुर गीत गा रहो ।

कह रही है यह घटा कह रहा है यह चमन,
कह रहा है अब यही पुष्प पुष्प जा अलिन,
तुम भी आज मेरे सा थोड़ा गुनगुना रहो,
तुम भी आज कोई सा मधुर गीत गा रहो ।

कह रही है यह धरा कह रहा है यह गगन,
कह रहा है अब यही जा रहा है जो भी क्षण,
तुम भी आज मेरे सा थोड़ा खिलखिला रहो,
तुम भी आज कोई सा मधुर गीत गा रहो ।

(05.10.2013)
सिडनी

107. पथ ही केवल तो पथिक.....

पथ ही केवल तो पथिक पहचान है,
पथ ही केवल तो पथिक पहचान है ।

घिर रही है अब अँधेरी घन निशा,
आ गयीं फिर से धरा प्रातः किरण ।
चल रहीं हैं आंधियाँ तूफ़ान घिर,
बह रहा है मंद शीतल फिर पवन ।
है कि दुर्गम या कि यह आसान है,
पथ ही केवल तो पथिक पहचान है ।

मरु ही केवल और कुछ तो है नहीं,
फिर से देखो दीखते है दूर वन ।
अब तो अपनी राह काँटों से भरी,
पड़ रहे हैं घास पर अब तो कदम ।
है कि आतप या कि नभ मुमुचान[1] है,
पथ ही केवल तो पथिक पहचान है ।

अब न जाने कौन सी दुर्गन्ध यह,
लो खिलें हैं राह में सुरभित सुमन ।
हैं कहीं पर व्याल हिंस्त्रक पशु बड़े,
दूर देखो नाचता घनप्रिय मगन ।
है कि नीरस या कि यह अभिराम है,
पथ ही केवल तो पथिक पहचान है ।

हो रहा भयभीत मन सुन कोई स्वर,
गा रही है कोकिला अपनी ही धुन ।
अब तो कोलाहल ही सुनते हम यहाँ,
सुन कहीं पर सज रहा संगीत सुन ।

है कि सुर में या कि मुनिव्रत शान्त है,
पथ ही केवल तो पथिक पहचान है ।

1. बादल, मेघ

(06.10.2013)
सिडनी

108. अब विटप से पर्ण सब.....

अब विटप से पर्ण सब झड़ने लगे,
अब विहग भी दूर सब उड़ने लगे ।

इक समय उतरा यहाँ मधुमास था,
तब नया ही हर्ष और उल्लास था ।
भर रहा था यह स्वयं पल्लव नए,
रंग नव थे और सृजन का राग था ।
अब तो सारे राग रंग मरने लगे,
अब विटप से पर्ण सब झड़ने लगे ।

हैं सिमटते पीत हो भयभीत अब,
टूट कर गिरना अभी या जाने कब ।
जाने कितने छिद्र हो जर्जर गए,
है न कोमलता बची रसहीन अब ।
अब तो हल्की वात से डरने लगे,
अब विटप से पर्ण सब झड़ने लगे ।

अब न कोई नीड़ खग कलरव यहाँ,
है पथिक को भी तले आश्रय कहाँ ।
सुर में मरमर राग जब सामर्थ्य थी,
अब तो नीरवता ही केवल है यहाँ ।
अब तो बीती बात सब करने लगे,
अब विटप से पर्ण सब झड़ने लगे ।

(08.10.2013)
सिडनी

109. भों-भों भों-भों करता कुत्ता.....

भों-भों भों-भों भों-भों करता कुत्ता कहता,
काँव-काँव काँव-काँव काँव-काँव करता कौआ कहता ।
यह ही कहता गुन गुन करता आकर भँवरा,
तो-तो तो-तो तो-तो करता तोता कहता ।
मीठे मीठे सुर में यह मैना कहती है,
इस घर में इक सुंदर सी गुड़िया रहती है ।

इस घर में ही रहती है गुड़िया की मम्मी,
जो करती गुड़िया के बालों में है कंघी ।
देती है गुड़िया को अच्छा अच्छा खाना,
उसको तो अपनी गुड़िया को खूब पढ़ाना ।
कूह कूह कूह कूह कर कोयल कहती है,
इस घर में इक सुंदर सी गुड़िया रहती है ।

इस घर में ही रहते हैं गुड़िया के पापा,
जब भी देखें गुड़िया को कहें गोदी आ जा ।
गोदी उसको लेकर उसकी लेते चुम्मी,
कहते हैं बाहों में भर गुड़िया मुस्का जा ।
माऊँ माऊँ माऊँ माऊँ कर बिल्ली कहती है,
इस घर में इक सुंदर सी गुड़िया रहती है ।

(09.10.2013)
सिडनी

110. साथ तुम हो तो सभी ही.....

साथ तुम हो तो सभी ही अर्थमय है,
वरना मैं भी अर्थवत्ता जानता हूँ ।
साथ तुम हो तो सभी ही सारमय है,
वरना मैं भी वास्तविकता जानता हूँ ।

यूँ तो पथ पर चल रहा हूँ मैं अनवरत,
साथ तुम हो चल रहा तब भी निरंतर ।
पास आए तो मिली नव दृष्टि मुझको,
हो गया सुन्दर सभी तो सब सुरूचिकर ।
साथ तुम हो तो सभी ही रागमय है,
वरना मैं भी रागमयता जानता हूँ ।
साथ तुम हो तो सभी ही अर्थमय है,
वरना मैं भी अर्थवत्ता जानता हूँ ।

यह नहीं काँटे गुह्वर सब मिट गए अब,
यह नहीं पथ फूल सारे बिछ गए अब ।
अब नहीं आते इधर तूफ़ान फिर से,
या कि चलता हूँ किसी अब दूसरे पथ ।
साथ तुम हो तो सभी ही शांतिमय है,
वरना मैं भी शांतिमयता जानता हूँ ।
साथ तुम हो तो सभी ही अर्थमय है,
वरना मैं भी अर्थवत्ता जानता हूँ ।

क्लेश विस्मृत कष्ट भी अब तो हैं सारे,
चल रहा हूँ संग संग जब से तुम्हारे ।
बढ़ रहा हूँ हो पवन पैरों तले अब,
स्वेद भी महके सुरभि सा तुम सहारे ।

साथ तुम हो तो सभी ही कांतिमय है,
वरना मैं भी कांतिमयता जानता हूँ ।
साथ तुम हो तो सभी ही अर्थमय है,
वरना मैं भी अर्थवत्ता जानता हूँ ।

(10.10.2013)
सिडनी

111. प्रबल झंझावात रे मन धीर.....

प्रबल झंझावात रे मन धीर धर मन धीर धर,
घन अँधेरी रात रे मन धीर धर मन धीर धर ।

सन सननन सन सननन सनसनाता रे पवन,
सर सररर सर सररर सरसराता रे पवन,
तीव्र अब है वात रे मन धीर धर मन धीर धर,
घन अँधेरी रात रे मन धीर धर मन धीर धर ।

गड़ गड़ड़ड़ गड़ गड़ड़ड़ गड़गड़ाता अश्मन्[1],
तड़ तड़ड़ड़ तड़ तड़ड़ड़ तड़तड़ाता अश्मन्,
हो रहा धन नाद रे मन धीर धर मन धीर धर,
घन अँधेरी रात रे मन धीर धर मन धीर धर ।

घन घननन घन घननन घनघनाता रे पवन,
धम धममम धम धममम धमधमाता रे पवन,
है घनी बरसात रे मन धीर धर मन धीर धर,
घन अँधेरी रात रे मन धीर धर मन धीर धर ।

1. बादल, बिजली, वज्रपात, गाज, पत्थर, पत्थर से होने वाली गरज ।

(11.10.2013)
सिडनी

112. यदि कहो तो साथ आकर चल.....

यदि कहो तो साथ आकर चल रहूँ मैं,
यदि नहीं तो पंथ पर चलता अकेला ।

खोजता हूँ संग-संग जो राह काटे,
साथ में अपने सभी दुःख दर्द बाँटे ।
मैं भी चुन लूँ शूल उसके सामने से,
चुन रहे वह भी मेरे पथ में से काँटे ।
यदि कहो तो साथ आकर चुन रहूँ मैं,
यदि नहीं तो चुन रहा अपने अकेला ।

चाहता हूँ सुर से मेरे सुर मिले अब,
चाहता हूँ मन चमन मेरा खिले अब ।
मैं जलूँ कब तक यूँ ही ऐसे निशा में,
साथ मेरे कोई बाती आ जले अब ।
यदि कहो तो जल रहूँ आ तेरी लौ में,
यदि नहीं तो जल रहा अपनी अकेला ।

चाह है कोई तो पाने की लगन भी,
साथ में होती सदा मीठी चुभन भी ।
उर सजाए कोई सुंदर सा जो सपना,
यूँ लगे चलना है पाने का जतन ही ।
यदि कहो तो स्वप्न बुन लूँ साथ में मैं,
यदि नहीं तो स्वप्न मैं बुनता अकेला ।

(13.10.2013)
सिडनी

113. फिर भरो नई उड़ान.....

फिर भरो नई उड़ान ऊँचे ऊँचे आसमान ।

दंभ द्वेष मिट सके,
क्रोध क्लेश मिट सके ।
ये रहे न भूख प्यास,
तम है शेष मिट सके ।
फिर भरो नई उड़ान ऊँचे-ऊँचे आसमान ।

हाथ हाथ अब मिले,
प्राण प्राण अब खिले ।
हों मनुज सुखी सभी,
राग रंग अब पले ।
फिर भरो नई उड़ान ऊँचे-ऊँचे आसमान ।

स्वप्न सत्य हो रहे,
शुभ सुकृत्य हो रहे ।
हो अमर्त्य पुत्र तुम,
शुचि अमर्त्य हो रहे ।
फिर भरो नई उड़ान ऊँचे-ऊँचे आसमान ।

(14.10.2013)
सिडनी

114. हो दुखी न निराश मन.....

हो दुखी न निराश मन रे, छोड़ मत तू आस मन रे,
हर निशा लाती है फिर से, भोर की सौगात मन रे ।

है अभी गहरा अँधेरा,
दूर है अब भी बसेरा ।
तू जरा सी धीर धर ले,
आएगा फिर से सवेरा ।
फैलेंगीं फिर स्वर्ण किरणें, होगा कुसुमित प्रात मन रे,
हर निशा लाती है फिर से, भोर की सौगात मन रे ।

साथ में कोई नहीं अब,
रह गए जाने कहाँ सब ।
साथ होंगे फिर सभी ही,
जैसे पहले आ मिले तब ।
आ बहेगी सुरभि भरकर, फिर मलय की वात मन रे,
हर निशा लाती है फिर से, भोर की सौगात मन रे ।

कुछ नहीं है दृष्टिगोचर,
है सभी ही आज़ ओझल ।
जग उठेंगे फिर से सारे,
देखते ही पुण्य दिनकर ।
खिल उठेंगे मन जलाशय, फिर नए जलजात मन रे,
हर निशा लाती है फिर से, भोर की सौगात मन रे ।

(15.10.2013)

सिडनी

115. मन चिड़िया पर गीले कर कर.....

मन चिड़िया पर गीले कर कर रह रह फुर फुर उड़ती है,
तब ही तो कवि की कोई कविता रचना क्रम में बढ़ती है ।

आ जाते हैं शब्द निरंतर भावों के संग लिपटे से,
चुपके चुपके सहमे सहमे कुछ शरमाए दुबके से ।
कहते आकर तुम ही बताओ कैसे कैसे सजना है,
कैसे किसको इस पल रोकें सब ही आगे बढ़ते से ।
जब उषा मन घन रजनी में चुप चुप आकर हँसती है,
तब ही तो कवि की कोई कविता रचना क्रम में बढ़ती है ।

जीवन कहता इस संसृति का कोई रंग न झूठा है,
सब को अपने अंतस भर लो हर एक रंग अनूठा है ।
विस्मयता से मन सजता हो तर्क जरा सा दूर रहे,
भौतिकता में पड़ मत जाना तत्व ज्ञान भी फ़ीका है ।
सृजन शक्ति ले नये राग जब अंतरतम में भरती है,
तब ही तो कवि की कोई कविता रचना क्रम में बढ़ती है ।

मन में नव संवेदन लेकर भाव जगत में खो जाना,
स्वर शब्दों के साथ तरंगित ऊपर नीचे उतराना ।
करुणा अपनी दृष्टि भरी हो सत से अंतस पावन हो,
लय में फिर सुंदरता सारी कविता में ला दिखलाना ।
यह संसृति अनगिन रूपों की पल पल रचना करती है,
तब ही तो कवि की कोई कविता रचना क्रम में बढ़ती है ।

(16.10.2013)
सिडनी

116. कहो शेर कह दूँ रुबाई सुना.....

कहो शेर कह दूँ रुबाई सुना दूँ सुना दूँ कहो तो मैं कोई ग़ज़ल,
कहूँ मैं कि पूनम का है चाँद तू ही तू ही तो जैसे खिला हो कमल ।

तेरी ज़ुल्फ़ लहरातीं काली घटाएँ उड़ती है कांधे तेरे बार–बार,
गालों पे तेरे पड़ते भँवर से जिन्हें देखते मुझको आता करार,
कहूँ मैं कि तुझसे हंसीं शाम मेरी मेरी ही तुझसे सुहानी सहर,
कहूँ मैं कि पूनम का है चाँद तू ही तू ही तो जैसे खिला हो कमल ।

तेरी मुस्कराहट से लगता है ऐसे आयी है जैसे फिर से बहार,
जब भी तू बोले लगता है ऐसा जैसे बजा हो अभी एक सितार,
कहूँ मैं कि तुझसा न दूजा है कोई कोई न दूजा है मेरी नज़र,
कहूँ मैं कि पूनम का है चाँद तू ही तू ही तो जैसे खिला हो कमल ।

आँखों में झाँकूँ जब भी तुम्हारी होता है मुझको अनोखा खुमार,
दिल में मेरे एक तेरी ही छवि है मन में बसा है तेरा ही प्यार,
कहूँ मैं कि तुझसे मुझे प्यार कितना कितना है तुझसे मेरे हमसफर,
कहूँ मैं कि पूनम का है चाँद तू ही तू ही तो जैसे खिला हो कमल ।

(17.10.2013)
सिडनी

117. इस तरह से तुम चलो.....

इस तरह से तुम चलो कि देख देख सब कहें,
कि जिस तरह से तुम चले कोई दूसरा नहीं ।

संकटों को देखकर तुम कभी झुके नहीं,
कंटकों का पंथ था तुम कभी रुके नहीं,

इस तरह से तुम बढ़ो कि देख देख सब कहें,
कि जिस तरह से तुम बढ़े कोई दूसरा नहीं ।

था घना अँधेर पर तुम सदा निडर रहे,
हो नहीं निराश तुम आँख अश्रु भर रहे,

इस तरह से तुम डटो कि देख देख सब कहें,
कि जिस तरह से तुम डटे कोई दूसरा नहीं ।

तुम जहाँ भी थे वहाँ रंगराग मिल गए,
सब उमंग से भरे साथ साथ मिल गए,

इस तरह से तुम खिलो कि देख देख सब कहें,
कि जिस तरह से तुम खिले कोई दूसरा नहीं ।

(21.10.2013)
सिडनी

118. मैं नवाजिश या कदरदानी.....

मैं नवाजिश या कदरदानी कहूँ,
शुक्रिया कह दूँ मेहरबानी कहूँ ।

मैं अकेला था न कोई साथ में,
बोलता किससे न कोई पास में ।
मिल गए जो तुम मुझे ऐसा लगा,
दीप सा जलता हो मेरी रात में ।

है यही मैं तो न अनजानी कहूँ,
शुक्रिया कह दूँ मेहरबानी कहूँ ।

आ सजाता है कोई सुंदर सपन,
नाचता मन का मयूरा हो मगन ।
लग रहा जैसे खिली सारी धरा,
है महकता जैसे कोई हो चमन ।

कह रहा अपनी न बेगानी कहूँ,
शुक्रिया कह दूँ मेहरबानी कहूँ ।

पास में तुम हो तो मैं मुस्का रहा,
आज़ अपने भाग्य पर इतरा रहा ।
जान ले इतना ही काफ़ी है मुझे,
मन ही मन में सुर सजाए गा रहा ।

है उसी की सब निगेहबानी कहूँ,
शुक्रिया कह दूँ मेहरबानी कहूँ ।

(22.10.2013)

सिडनी

119. आज़ कुछ और बात.....

आज़ कुछ और बात रहने दो,
लब पे आई है बात कहने दो ।

जान तुम पर निसार करते है,
एक तुमसे ही प्यार करते हैं ।
कहना चाहा था कई बार यही,
जाने क्यूँ कहते हुए डरते हैं ।
आज़ जैसा है जो भी सहने दो,
लब पे आई है बात कहने दो ।

हमने इक तेरा साथ माँगा है,
उससे तेरा ही पास माँगाा है ।
माँगते हैं तुझी को हम रब से,
सदा तेरा ही हाथ माँगा है ।
आज़ कुछ और ख़ास रहने दो,
लब पे आई है बात कहने दो ।

याद ने कितने ही जगाए हैं,
इसके कितने ही हम सताए हैं ।
एक तुझको ही साथ में लेकर,
रोज़ आँसू ही खुद बहाए हैं ।
आज़ बहते हैं इनको बहने दो,
लब पे आई है बात कहने दो ।

(23.10.2013)
सिडनी

120. चुपके से आकर मेरे हृदय.....

चुपके से आकर मेरे हृदय, हँसता कोई मुस्कराता कोई ।

खिलता हूँ जैसे कोई फूल हूँ,
हाथों में मेरे तेरा हाथ है ।
मेरी खुशी की न सीमा कोई,
इतना जो मेरे तू पास है ।

चुपके से आकर मेरे हृदय, खिलता कोई खिलखिलाता कोई ।

मैं ही न जानूँ तो कैसे कहूँ,
तुझमें न जाने क्या बात है ।
तुझसे ही मेरा मुस्काता दिन,
तू है तो मेरी हंसीं रात है ।

चुपके से आकर मेरे हृदय, चमका कोई चहचहाता कोई ।

थोड़ा सा मेरे पास और आ,
तू ही तो मेरा हंसीं ख़्वाब है ।
तू ही तो मेरा अपना है इक,
तू ही तो मेरा मधुर राग है ।

चुपके से आकर मेरे हृदय, महका कोई गुनगुनाता कोई ।

(24.10.2013)
सिडनी

121. जब से तेरे सन्निकट हो.....

जब से तेरे सन्निकट हो, संग पथ पर चल रहे हैं,
मेरे नयनों में आ अविरल, स्वप्न सुंदर पल रहे हैं ।

तेरे तन की लय से लगता,
राग कोई सज गया है ।
तेरे स्वर को मैं समझता,
गीत कोई बज गया है ।
मेरे कानों में आ रह रह, स्वर तेरे ही सज रहे हैं,
जब से तेरे सन्निकट हो, संग पथ पर चल रहे है ।

इक तेरी पहचान में ही,
फूल का खिलना छिपा है ।
इक तेरी मुस्कान से ही,
वह सुरभि को ले भरा है ।
एक तेरी ही महक को, श्वास पल पल भर रहे हैं,
जब से तेरे सन्निकट हो, संग पथ पर चल रहे है ।

मेरे मन का घन अँधेरा
अब कहीं जा खो गया है ।
मेरे चेतन की कलुषता,
कोई आकर धो गया है ।
मन के अंतस में निरंतर, दीप अनगिन जल रहे हैं,
जब से तेरे सन्निकट हो, संग पथ पर चल रहे है ।

(10.12.2013)
सिडनी

122. किसी ने किसी से यही तो.....

किसी ने किसी से यही तो कहा,
किसी ने किसी से यही तो सुना ।
ऐसे ही कुछ वे करीब आ गए,
आपस में जन्मों का रिश्ता बना ।

जीवन की कितनी लंबी डगर है,
मेरा न कोई यहाँ हमसफर है ।
मुझको सदा को साथी बना लो,
आशा भरी अब तुम्हीं पर नज़र है ।

ऐसे ही कुछ वे घबरा गए,
कहता है कोई क्या तुमने चुना ।
ऐसे ही कुछ वे करीब आ गए,
आपस में जन्मों का रिश्ता बना ।

मुझको मिलेगा यदि साथ तेरा,
जो भी हो मेरा वो हो भो तेरा ।
हरदम बैठाऊँगा पलकों पे अपनी,
बाँहों में मेरी हो तेरा बसेरा ।

ऐसे ही कुछ वे भरमा गए,
कहा फिर दोबारा क्या तुमने गुना ।
ऐसे ही कुछ वे करीब आ गए,
आपस में जन्मों का रिश्ता बना ।

जो हाल तेरा वही तो हमारा,
मिल जाए तेरा हमें यदि सहारा ।
आँचल में मैं चाँद तारे सजा लूँ,
तेरे साथ हो ज़िंदगी भर गुज़ारा ।

ऐसे ही कुछ वे शरमा गए,
कहे प्यार तुमसे हमें अति घना ।
ऐसे ही कुछ वे करीब आ गए,
आपस में जन्मों का रिश्ता बना ।

तेरे बिना ना पल चैन पाऊँ,
तू हो जिधर भी वहाँ मैं भी आऊँ ।
जब तक जियूँ मैं जियूँ साथ तेरे,
अगले जनम में तुझको ही पाऊँ ।

ऐसे ही कुछ वे मुस्का गए,
न हो प्यार अपना कभी भी फना ।
ऐसे ही कुछ वे करीब आ गए,
आपस में जन्मों का रिश्ता बना ।

(10.12.2013)
सिडनी

123. मेरे हो तुम ही मेरे हो.....

मेरे हो तुम ही मेरे हो तुम,
मेरे हो मन में पुकारूँ तुम्हें ।
मेरे पास आओ आओ रे तुम,
हाथों से अपने सवारुँ तुम्हें ।

बालों की लट को पीछे करूँ,
चेहरे पे तेरे जो आई हुई ।
बिंदी को तेरी मैं सीधी करूँ,
तूने जो तिरछी लगाई हुई ।

सोचूँ तुम्हें मैं तो सोचूँ तुम्हें,
मैं तो सदा ही विचारुँ तुम्हें ।
मेरे पास आओ आओ रे तुम,
हाथों से अपने सवारुँ तुम्हें ।

आजा हटा दूँ तिनके को मैं,
चिपटा है तेरे जो गाल पर ।
पसीने की बूँदें आ पोंछ दूँ,
चमकीं हैं तेरे जो भाल पर ।

देखूँ तुम्हें मैं तो देखूँ तुम्हें,
हो के दीवाना निहारुँ तुम्हें ।
मेरे पास आओ आओ रे तुम,
हाथों से अपने सवारुँ तुम्हें ।

माला का ला मैं सुलझा रहूँ,
तेरी चेन मैं है उलझी हुई ।
साड़ी को तेरी तह से भरूँ,
काँधें पे तेरे जो लटकी हुई ।

छू लूँ तुम्हें आओ छू लूँ तुम्हें,
आँखों में अपनी उतारूँ तुम्हें ।
मेरे पास आओ आओ रे तुम,
हाथों से अपने सवारुँ तुम्हें ।

(11.12.2013)
सिडनी

124. हो रहे प्रबल आघात.....

हो रहे प्रबल आघात हृदय सब चुप सह जाओ,
है सभी समय की बात मानकर चुप रह जाओ ।

किसने जाना कौन तुम्हें भी क्यों जानेगा,
जानेगा वह पीर जो जिसको प्रिय मानेगा ।
पौंछेगा आकर नयनों से वह ही तो आँसू,
व्यथित हृदय की भाषा जो पढ़ना जानेगा ।
मत छलकाओ अश्रु न इनमें तुम बह जाओ,
है सभी समय की बात मानकर चुप रह जाओ ।

कब किसने किसके पथ के बीनें हैं काँटे,
सबने अपने हिस्से के सुख दर्द ही बाँटे ।
सबने ही भोगा अपना हँसना और रोना,
किसके भरने से कब भरते किसके घाटे ।
मत भरमाओं खुद को मत भ्रम में रह जाओ,
है सभी समय की बात मानकर चुप रह जाओ ।

जीवन पथ है सदा नहीं यह फूल बिछाता,
समय समय पर पड़ता कंटक से भी नाता ।
पथ आलोकित कभी यहाँ घनघोर अँधेरा,
यदि कलरव है कभी घिरा गहरा सन्नाटा ।
है यही उसी की मर्जी यह मन मन कह जाओ,
है सभी समय की बात मानकर चुप रह जाओ ।

(16.12.2013)
सिडनी

125. दृष्टि दृष्टि से.....

दृष्टि दृष्टि से मिली,
दृष्टि को वह भा गईं ।
कुछ तो ऐसा हो गया,
कि दोनों को लुभा गईं ।

और प्यार मिल गया,
बिना सुने बिना कहे ।

फूल पाँखुरी सदृश,
खिल उठे थे वे अधर ।
बार-बार जा टिकीं,
फिर उसी पे वे नज़र ।

रोम-राम खिल गया,
बिना छुए बिना गहे ।

मीठा स्वप्न सा कोई,
मन को घेरने लगा ।
तन भी मेघ सा बना,
नभ में तैरने लगा ।

अश्रु आँख तिर गया,
बिना गिरे बिना बहे ।

जो मिले थे ग़ैर से,
तब लगा कि ख़ास हैं ।
है भले ही दूर वह,
पर कि जैसे पास हैं ।

एतबार मिल गया,
बिना सुने बिना कहे ।

(23.12.2013)

सिडनी

126. कहे मम्मी पापा कहें.....

कहें मम्मी पापा कहें नाना नानी,
कहें दादी बाबा कहें मामा मामी,

तेरा जनम दिन ओ गुड़िया रानी,
बधाई बधाई तुम्हें गुड़िया रानी ।

लायेंगे तुमको सभी अब खिलोने,
गुड्डा औ गुड़िया औ उनके बिछोने,

फूलो फलो और महके जवानी,
बधाई बधाई तुम्हें गुड़िया रानी ।

बड़े हो के तुम भी बड़े काम करना,
अपना जगत में बड़ा नाम करना,

हो तेरा जीवन मधुर सी कहानी,
बधाई बधाई तुम्हें गुड़िया रानी ।

हो तुम जहाँ भी सदा मुस्कराओ,
ख़ुशी के तराने सदा सुर में गाओ,

दिन हों सुनहरे ओ रातें सुहानी,
बधाई बधाई तुम्हें गुड़िया रानी ।

(25.12.2013)
सिडनी

127. अगम पथ के अथक.....

अगम पथ के अथक राही, रात दिन चलना तुम्हें है,
प्रबल झंझावल फिर भी, रात दिन बढ़ना तुम्हें है ।

क्या पता किस मोड़ पर हो जाए जाने कब अँधेरा,
क्या पता कैसे कहाँ छिप जाए जाकर फिर सवेरा,

दीप की ज्वाला सदृश हो, रात दिन जलना तुम्हें है,
अगम पथ के अथक राही, रात दिन चलना तुम्हें है ।

क्या पता कोई न हो साथी सुनो संग में तुम्हारे,
क्या पता कोई न हो साथी कहे तुमहो पुकारे,

मान कर यह ही नियति है, रात दिन पलना तुम्हें है,
अगम पथ के अथक राही, रात दिन चलना तुम्हें है ।

क्या पता हों दृष्टिगोचर राह में केवल ही मरूथल,
क्या पता तलवों तले आते रहें कंटक ही कंटक,

पुष्प के सम सुरभि से भर, रात दिन खिलना तुम्हें है,
अगम पथ के अथक राही, रात दिन चलना तुम्हें है ।

(30.12.2013)
सिडनी

128. आज कैसा है मेरा.....

आज कैसा है मेरा हाल तुम्हें क्या मालूम,
कैसे बीतें हैं मेरे साल तुम्हें क्या मालूम ।

यूँ तो होता हूँ तबस्सुम सा भरे ओठों पर,
कैसे खिंचते हैं मेरे गाल तुम्हें क्या मालूम ।

कैसी ख़ामोश समन्दर सी निगाहें अब हैं,
कैसे बिखरे हैं मेरे बाल तुम्हें क्या मालूम ।

अब तो सीने को सजाए है फ़कत सूनापन,
कैसी बदली है मेरी चाल तुम्हें क्या मालूम ।

(31.12.2013)
सिडनी

129. जो भी हो अनुकूल समय हो.....

जो भी हो अनुकूल समय हो, मंगलमय नववर्ष तुम्हें हो ।

उर मे भर ले नूतन आशा,
पूरी हो ले हर अभिलाषा ।
बात रहे ना कोई अधूरी,
रह न जाए कोई पिपासा ।

हो ना चिंता ना ही भय हो, मंगलमय नववर्ष तुम्हें हो ।

छँट जाए जीवन का हर तम,
खुशियों से भर जाए दामन ।
जीवन की फुलवारी महके,
महके तेरा घर और आँगन ।

अप्रतिम तेरा सूर्य उदय हो, मंगलमय नववर्ष तुम्हें हो ।

बढ़ते जाओ उन्नति के पथ,
धीरे धीरे चलकर अविरत ।
छू लो नभ की ऊँचाई तुम,
सामर्थ्यों के पंख लगाकर ।

मन में करुणा प्रेम सदय हो, मंगलमय नववर्ष तुम्हें हो ।

(31.12.2013)
सिडनी

130. धुआँ धुआँ धुआँ धुआँ.....

धुआँ धुआँ धुआँ धुआँ,
जिधर दिखे धुआँ धुआँ ।

किसका इंतज़ार है,
किसको बेकरार है ।
किसकी राह देखता,
कोई आएगा यहाँ ।

धुआँ धुआँ धुआँ धुआँ,
जिधर दिखे धुआँ धुआँ ।

कारवाँ बिखर गया,
तेरा चमन उजड़ गया ।
है न कोई आस है,
किसको खोजता यहाँ ।

धुआँ धुआँ धुआँ धुआँ,
जिधर दिखे धुआँ धुआँ ।

है यहाँ भी कौन है,
काटता सा मौन है ।
है न कोई भी सदा,
किसको सोचता यहाँ ।

धुआँ धुआँ धुआँ धुआँ,
जिधर दिखे धुआँ धुआँ ।

(23.02.2014)
सिडनी

131. आने का वायदा कर.....

आने का वायदा कर महबूब नहीं आया,
तब से इन ओठों ने कोई गीत नहीं गाया ।

माथे न लगी बिंदी बालों न सजा गजरा,
हाथों न लगी मेंहदी आँखों न लगा कजरा,

न महकीं फिर श्वासें ना आँचल लहराया,
आने का वायदा कर महबूब नहीं आया ।

आया फिर से सावन बरसा रिमझिम पानी,
फिर आया हर मौसम भर रंग हरे धानी,

ये सब यूँ ही बीते नहीं कोई भी भाया,
आने का वायदा कर महबूब नहीं आया ।

जब से परदेस गया क्या मुझको भूल गया,
क्या कोई और बाहें वो जिनमें झूल गया,

हमने तो हर पल ही आँसू ही छलकाया,
आने का वायदा कर महबूब नहीं आया ।

(07.03.2014)
बुलन्दशहर

132. रात से आई सहर.....

रात से आई सहर,
नींद न आई नज़र ।
हम तो जागे ही रहे,
यूँ हीं बीते ये पहर ।

द्वार कुछ ऐसे हिले,
जैसे कोई हो खड़ा ।
आ के चुपके से कोई,
ले रहा नाम मेरा ।

लगा धीमे से कोई,
दे रहा हो दस्तक ।
हम तो जागे ही रहे,
यूँ हीं बीते ये पहर ।

ले के तकिये को कभी,
अपनी आँखों को ढका ।
कभी सिर नीचे लिया,
फिर कभी पेट धरा ।

कभी उठ बैठे हम,
लेटे ले ले करवट ।
हम तो जागे ही रहे,
यूँ हीं बीते ये पहर ।

कभी किसी शोक भरे,
कभी घबराए हम ।
कभी कुछ आई हँसी,
कभी मुस्काए हम ।

बार बार ऐसा लगा,
वक़्त जाता हो ठहर ।
हम तो जागे ही रहे,
यूँ हीं बीते ये पहर ।

(16.03.2014)
सिडनी

133. सारे जग में सबसे सुन्दर.....

सारे जग में सबसे सुन्दर मेरा भारत देश,
प्यारा भारत देश है मेरा न्यारा भारत देश ।
सब देशों में सबसे बढ़कर मेरा भारत देश,
प्यारा भारत देश है मेरा न्यारा भारत देश ।

आया जो बाहें फैलाये उसको इसने अपनाया,
उसके सिर को काँधे लेकर अपने हाथों दुलराया ।
उसने जाना एक शक्ति से हैं सारी ही सत्ताएँ,
अनगिन सत्ता एक शक्ति में इसने परचम फहराया ।

इसी भूमि में कभी हुआ था संस्कृति का उन्मेष,
प्यारा भारत देश है मेरा न्यारा भारत देश ।
सब देशों में सबसे बढ़कर मेरा भारत देश,
प्यारा भारत देश है मेरा न्यारा भारत देश ।

इस धरती पर पैदा होते शंकर गौतम और गाँधी,
इसके प्रांगण में स्थित हैं ताजमहल संगम साँची ।
हर मानव मे मानवता के प्रति होता विश्वास अटल,
जाति धर्म भाषाएँ कितनी फिर भी सब भारत वासी ।

सत्य अहिंसा और धर्म का देता नित संदेश,
प्यारा भारत देश है मेरा न्यारा भारत देश ।
सब देशों में सबसे बढ़कर मेरा भारत देश,
प्यारा भारत देश है मेरा न्यारा भारत देश ।

तरह तरह के यहाँ सजे हैं मन्दिर मसजिद गुरूद्वारे,
चैत्य कहीं स्तूप कहीं पर शाक्त पीठ हैं मठ न्यारे ।
गूँज रही है जगह जगह पर संतों गुरूओं की वाणी,
अन्धकार को दूर भगाओ आए उजाला तम हारे ।

अंबर गूँजे अल्ला अकबर ब्रह्मा विष्णु महेश,
प्यारा भारत देश है मेरा न्यारा भारत देश ।
सब देशों में सबसे बढ़कर मेरा भारत देश,
प्यारा भारत देश है मेरा न्यारा भारत देश ।

नदियों में संगीत भरा है बहतीं सुर में कल कल कल,
पवन बहे और कहता जाता रुक मत केवल चल चल चल ।
ज्ञानी कहते जीवन सीमित जो शुभ करना है कर ले,
वरना फिर तू पछतायेगा जीवन जाता पल प्रतिपल ।

दूर हटे मन चंचलता फिर स्थिर मनस विशेष,
प्यारा भारत देश है मेरा न्यारा भारत देश ।
सब देशों में सबसे बढ़कर मेरा भारत देश,
प्यारा भारत देश है मेरा न्यारा भारत देश ।

(17.03.2014)
सिडनी

134. सबसे प्यारा देश हमारा.....

सबसे न्यारा देश हमारा सबसे ऊँची शान,
भारत देश हमारा प्यारा भारत देश महान ।

तुंग हिमालय उत्तर स्थित दक्षिण स्थित रत्नाकर,
विंध्याचल को मध्य सजाए बहती नदियों का आगर,

इसके सारे प्रांगण फैले वन उपवन मैदान,
भारत देश हमारा प्यारा भारत देश महान ।

मसजिद सजीं अजानों से तो गुरु वाणी से गुरुद्वारे,
स्तुति ध्वनि से चर्च सजें तो घंटा ध्वनि मंदिर सारे,

सभी सुरों में अपने कहते प्रभु दे दो वरदान,
भारत देश हमारा प्यारा भारत देश महान ।

पाणिनि कालिदास यहीं हैं भरत भास और ज्ञानेश्वर,
भारवि तुलसीदास यहीं हैं व्यास वाल्मीकि सोमेश्वर,

यहीं पे चारों वेद रचे हैं गीता धम्म पुराण,
भारत देश हमारा प्यारा भारत देश महान ।

इस धरती पर पैदा होते गाँधी गौतम गुरुनानक,
संत औलिया ज्ञानी पंडित जिनकी वाणी सुखदायक,

सभी एक सुर में यह गाते कण कण में भगवान,
भारत देश हमारा प्यारा भारत देश महान ।

षडऋतुओं से यह आच्छादित मलय समीर बहे हर पल,
अनगिन इसके पावन स्थल उर में स्थित ताज महल,

इसकी माटी में उगते हैं प्रचुर सभी खाद्यान,
भारत देश हमारा प्यारा भारत देश महान ।

(18.03.2014)
सिडनी

135. तनहा हूँ मैं तनहा सफ़र.....

तनहा हूँ मैं तनहा सफ़र, मंजिल नहीं लंबी डगर,
माना नहीं तू हमसफर, फिर भी तू अपना जानकर,
कुछ दूर मेरे साथ चल,
कुछ दूर मेरे साथ चल ।

सज लें डगर अमराइयाँ, कुछ दूर हों तनहाइयाँ,
शायद यूँ ही छू लें मुझे, आकर तेरी परछाईयाँ,
हो ज़िंदगी यूँ ही बसर,
कुछ दूर मेरे साथ चल ।

मेरे अधूरे ख़्वाब से, जुड़ जाएँ तेरे ख़्वाब से,
किसको पता अंजाम क्या, हो दास्ताँ आगाज से,
कल की किसी को क्या खबर,
कुछ दूर मेरे साथ चल ।

होंगी कभी खामोशियाँ, होंगी कभी सरगोशियाँ,
होगे जो मेरे साथ तुम, होंगी कभी मदहोशियाँ,
शायद तू भी जाए मचल,
कुछ दूर मेरे साथ चल ।

(18.03.2014)
सिडनी

136. जो बात मेरे लबों पर.....

जो बात मेरे लबों पर रुकी है,
उसी बात को मैं उन्हें बोल दूँगा ।
छिपा राज़ मेरे जो सीने अब तक,
उसी राज़ को मैं उन्हें खोल दूँगा ।

कोई शाम होगी जो वो पास होंगे,
मुझको वो लम्हें बड़े ख़ास होंगे ।
मानूँगा मैं तो ख़ुदा का करम है,
इतने जो मेरे वो जब पास होंगे ।

बातें किधर की चाहे भी जो हों,
मुद्दे को मैं तो इधर मोड़ दूँगा ।
छिपा राज़ मेरे जो सीने अब तक,
उसी राज़ को मैं उन्हें खोल दूँगा ।

कहूँगा मेरी ही तुम आज सुन लो,
इसको ही सोचो इसको ही गुन लो ।
फिर जो कहोगे सभी कुछ सुनेंगे,
सुनने को मेरी थोड़ा सा थम लो ।

माना कि थोड़ी सी ये बदतमीज़ी,
मैं रस्मों–रिवायत सभी तोड़ दूँगा ।
छिपा राज़ मेरे जो सीने अब तक,
उसी राज़ को मैं उन्हें खोल दूँगा ।

देखूँगा उनका कि है हाल कैसा,
गालों के उनके रंग लाल कैसा ।
किसी से परेशां ख़फा तो नहीं हैं,
कहने को अब है माहौल कैसा ।

लगने लगा ये मुनासिब नहीं अब,
फिर के लिए मैं इसे छोड़ दूँगा ।
छिपा राज़ मेरे जो सीने अब तक,
उसी राज़ को मैं उन्हें खोल दूँगा ।

(19.03.2014)
सिडनी

137. बोलो जी बोलो.....

बोलो जी बोलो हमें भी बताओ,
जो राज़ दिल में हमें भी जताओ ।

पपीहा भी सुर में यही तो सुनाए,
भोंरा भी गुनगुन यही गुनगुनाए ।
गाती यही तो सुर में हो कोयल,
तोता भी सुर में यही गीत गाए ।

बोलो जी बोलो हमें भी बताओ,
जो राज़ दिल में हमें भी जताओ ।

सुन लो यही तो पवन कह रहा है,
उपवन सजाता सुमन कह रहा है ।
यही कह रही है नदी गीत गाती,
सुन लो यही तो चमन कह रहा है ।

बोलो जी बोलो हमें भी बताओ,
जो राज़ दिल में हमें भी जताओ ।

कहता यही तो नभ का ये बादल,
पेड़ों के पत्तों से बजती ये पायल ।
चुप क्यों हो ऐसे कुछ बोल दो तुम,
कहता धरा का सतरंगी आँचल ।

बोलो जी बोलो हमें भी बताओ,
जो राज़ दिल में हमें भी जताओ ।

(19.03.2014)
सिडनी

138. वो तेरी मुझपे नज़र.....

वो तेरी मुझपे नज़र, वो तेरा मुस्काना,
जैसे खिलता हो कमल, वो तेरा खिल जाना ।
हम तो सोचा ही किये, रात भर सोये नहीं,
हम तो जागा ही किये, रात भर सोये नहीं ।

वो तेरे पड़ते कदम, वो तेरा पास आना,
हो कोई बादे सबा, मुझे आ महकाना ।
हम तो सोचा ही किये, रात भर सोये नहीं,
हम तो जागा ही किये, रात भर सोये नहीं ।

वो तेरे हिलते अधर, वो तेरा कह जाना,
जैसे हो गीत मधुर, कानों में पड़ जाना ।
हम तो सोचा ही किये, रात भर सोये नहीं,
हम तो जागा ही किये, रात भर सोये नहीं ।

वो मुझे छूना ज़रा, वो तेरा घबराना,
किसी छुइमुइ की तरह, वो तेरा शरमाना ।
हम तो सोचा ही किये, रात भर सोये नहीं,
हम तो जागा ही किये, रात भर सोये नहीं ।

(24.03.2014)
सिडनी

139. तू थी तो मैं.....

तू थी तो मैं माँ कहता था,
अब किसको आके कहूँगा माँ ।
तू थी तो आ संग रहता था,
अब किसके साथ रहूँगा माँ ।

है जग का कारण परमेश्वर,
मेरा कारण तो तुमसे था ।
मेरा जीवन बचपन यौवन,
पालन–पोषण तो तुमसे था ।

जब अपनी बात करूँगा मैं,
तेरी ही बात करूँगा माँ ।
तू थी तो आ संग रहता था,
अब किसके साथ रहूँगा माँ ।

तुमने चाहा मैं संग होऊँ,
चाहा था फिर भी हो न सका ।
मैं तेरा अच्छा सुत होऊँ,
चाहा था फिर भी बन न सका ।

अपनी पीड़ा और कुंठा को,
अब हो चुपचाप सहूँगा माँ ।
तू थी तो आ संग रहता था,
अब किसके साथ रहूँगा माँ ।

संग में बीता कोई सा पल,
स्मृति भर लेगी रह–रह कर ।
फिर उनको मैं दोहराऊँगा,
फिर–फिर कर मैं मैं फिर–फिर कर ।

नयना फिर आँसू भर लेंगे,
फिर उनके संग बहूँगा माँ ।
तू थी तो आ संग रहता था,
अब किसके साथ रहूँगा माँ ।

(29.03.2014)
बुलन्दशहर

140. मोद रंग से सजी.....

मोद रंग से सजी,
मान रंग से सजी ।
सत्य रंग से सजी,
ज्ञान रंग से सजी ।
राग रंग से सजी कल्पना सजी रहे ।

हर्ष रंग से सजी,
हास रंग से सजी ।
नेह रंग से सजी,
आस रंग से सजी ।
भक्ति रंग से सजी भावना सजी रहे ।

सौम्य रंग से सजी,
साम्य रंग से सजी ।
शील रंग से सजी,
शांत रंग से सजी ।
शौर्य रंग से सजी कामना सजी रहे ।

मूल रंग से सजी,
मिश्र रंग से सजी ।
श्वेत रंग से सजी,
श्याम रंग से सजी ।
सप्त रंग से सजी अल्पना सजी रहे ।

(22.04.2014)
सिडनी